उत्तराखंडियत का आत्मघाती चेहरा हैं हरीश रावत

दिव्य हिमगिरि

हिमालयी राज्यों की पहली साप्ताहिक पत्रिका

नज़र सब पर

15th ANNIVERSARY

वर्ष 15 | अंक 48 | मूल्य 05 रुपये | 19-25 अप्रैल, 2026

12 साल में पहली बार संसद में अटकी मोदी सरकार

पैरेंट्स का हम पर भरोसा, एक सुखद अनुभूति: डॉ. पंकज

देवभूमि में आस्था का महापर्व
चारधाम यात्रा का शंखनाद

दिव्य हिमगिरि

19-25 अप्रैल, 2026

संपादक
डॉ. कुँवर राज अस्थाना

वरिष्ठ संवाददाता
शंभूनाथ गौतम

संवाददाता
पूनम आर्या

विज्ञापन
सुनील सेमवाल

ग्राफिक डिजायनर
देव भट्ट

संवाददाता
हरिद्वार: डॉ. रजनीश गौतम
पौडी: रत्नमणि भट्ट
कोटद्वार: के.पी. बौंठियाल
रूद्रपुर: हेमचन्द्र बुडलाकोटी
चमोली: मुकेश रावत
रुड़की: श्रीगोपाल नारसन
नैनीताल: शीतल तिवारी
अल्मोड़ा: संजय कुमार अग्रवाल (एड.)
विकासनगर: अजय शर्मा
प्रसार: रमेश सिंह रावत

संपादकीय कार्यालय : 6, म्युनिसिपल रोड, बाला हिसार स्कूल के सामने, डालनवाला देहरादून (उत्तराखंड)
मोबाइल : +91 8433456398, 9410353164
Email: divyahimgiriddn@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक कुँवर बहादुर अस्थाना द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून से मुद्रित तथा 39/7 ई, ई. सी. रोड, (निकट मार्शल स्कूल सीनियर विंग) देहरादून-248001 उत्तराखण्ड से प्रकाशित।
संपादक: कुँवर बहादुर अस्थाना*
*(पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के लिए उत्तरदायी)

विकासनगर अग्निकांड: चेतावनी, चुनौती और जिम्मेदारी

लखनऊ के विकासनगर क्षेत्र में हाल ही में घटी भीषण अग्निकांड की घटना केवल एक स्थानीय हादसा नहीं, बल्कि हमारी प्रशासनिक और सामाजिक व्यवस्थाओं की गंभीर कमियों का दर्पण है। इस दुर्घटना में एक पूरा गांव आग की लपटों में समा गया, जिससे अनेक परिवारों का आशियाना उजड़ गया और वर्षों की मेहनत पलक झपकते ही राख में बदल गई। यह घटना कई महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े करती है- क्या हमारी आपदा प्रबंधन व्यवस्था इतनी कमजोर है कि समय रहते आग पर नियंत्रण नहीं पाया जा सका? क्या स्थानीय प्रशासन के पास पर्याप्त संसाधन, उपकरण और प्रशिक्षण का अभाव है? और सबसे अहम, क्या हम पूर्व में हुई ऐसी घटनाओं से कोई सीख लेने में विफल रहे हैं? ग्रामीण क्षेत्रों में अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव एक बड़ी समस्या है। ज्वलनशील पदार्थों का अनियंत्रित उपयोग, कच्चे मकान, संकरी गलियां तथा अग्निशमन वाहनों की सीमित पहुंच जैसी परिस्थितियां इस प्रकार की घटनाओं को और भी भयावह बना देती हैं। साथ ही, कई स्थानों पर विद्युत तारों की खराब स्थिति, अवैध कनेक्शन और लापरवाही भी आग लगने के प्रमुख कारण बनते हैं। इस प्रकार की घटनाओं में केवल संपत्ति का ही नुकसान नहीं होता, बल्कि लोगों के मन में भय और असुरक्षा की भावना भी गहराई तक बैठ जाती है। बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है, परिवारों का सामाजिक और आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है, और पीड़ितों के सामने जीवन को पुनः पटरी पर लाने की कठिन चुनौती खड़ी हो जाती है। सरकार और प्रशासन की जिम्मेदारी केवल राहत और बचाव कार्यों तक सीमित नहीं होनी चाहिए। पीड़ित परिवारों को त्वरित और उचित मुआवजा, स्थायी पुनर्वास तथा उनके जीवनयापन के साधनों को पुनर्स्थापित करने के लिए विशेष योजनाएं लागू करना अत्यंत आवश्यक है। साथ ही, अग्निशमन विभाग को आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित करना, ग्रामीण क्षेत्रों में फायर स्टेशन की संख्या बढ़ाना और आपातकालीन प्रतिक्रिया समय को कम करना भी जरूरी है। इसके अतिरिक्त, गांव स्तर पर अग्नि सुरक्षा संबंधी जागरूकता अभियान चलाना, स्कूलों और पंचायतों के माध्यम से लोगों को प्राथमिक बचाव का प्रशिक्षण देना, तथा सामुदायिक स्तर पर जल स्रोतों और अग्निशमन साधनों की उपलब्धता सुनिश्चित करना समय की मांग है। स्थानीय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। यह घटना हमें यह सोचने पर विवश करती है कि विकास का लाभ केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित न रहकर ग्रामीण अंचलों तक भी पहुंचना चाहिए। जब तक गांवों में बुनियादी सुरक्षा सुविधाओं का सुदृढ़ीकरण नहीं किया जाएगा, तब तक इस प्रकार की घटनाएं बार-बार दोहराई जाती रहेंगी और निर्दोष लोगों को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। अतः यह समय आत्ममंथन के साथ-साथ ठोस और प्रभावी कार्रवाई का है। यदि हम अभी भी नहीं चेते, तो ऐसी त्रासदियां भविष्य में और भी भयावह रूप ले सकती हैं। आवश्यक है कि हम सब मिलकर एक सुरक्षित, जागरूक और सुदृढ़ समाज के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाएं, ताकि कोई भी गांव फिर कभी इस प्रकार की विनाशकारी आग की चपेट में न आए।

डॉ. कुँवर राज अस्थाना

पैरेंट्स का हम पर भरोसा, एक सुखद अनुभूतिः डॉ. पंकज

डॉ पंकज जे. राणा
(MBBS, MD PEDIATRICS F-NNF)
बाल रोग एवं नवजात शिशु विशेषज्ञ
इंदिरा आईवीएफ, देहरादून

इंदिरा आईवीएफ देहरादून के एनआईसीयू में सलाहकार के पद पर कार्यरत डॉ पंकज राणा को अपनी मेडिकल ट्रेनिंग के दौरान बच्चों के साथ समय व्यतीत करना अच्छा लगता था, इसी वजह से उन्होंने बाल रोग विशेषज्ञ बनने का विकल्प चुना। उनके करियर को लेकर लोकेश राज अस्थाना की उनसे बातचीत हुई। पेश हैं बातचीत के प्रमुख अंश -

आपकी पारिवारिक और शैक्षणिक पृष्ठभूमि के बारे में बताए

मैं एक बाल रोग विशेषज्ञ और नवजात शिशु विशेषज्ञ हूँ। वर्तमान में मैं इंदिरा आईवीएफ देहरादून के एनआईसीयू में सलाहकार के रूप में कार्यरत हूँ, जहाँ हम समय से पहले जन्मे और बीमार नवजात शिशुओं की देखभाल करते हैं। मेरे माता-पिता मूल रूप से देहरादून के निवासी हैं और मैंने वडोदरा, गुजरात से एमडी बाल रोग की पढ़ाई पूरी की है।

चिकित्सा के क्षेत्र में कैसे आना हुआ, इसके पीछे किसकी प्रेरणा रही

मेरी माताजी श्रीमती विद्यावती राणा और पिताजी श्री जगमोहन सिंह राणा चाहते थे कि मैं डॉक्टर बनूँ। मुझे भी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जाने के बजाए चिकित्सा में ज्यादा रूचि थी इसलिए मैंने चिकित्सा क्षेत्र को अपना करियर बनाने का फैसला किया। अपनी मेडिकल ट्रेनिंग के दौरान, मुझे छोटे बच्चों के साथ काम करना बहुत संतोषजनक और सुखद लगा, इसलिए मैंने बाल रोग विशेषज्ञ बनने का विकल्प चुना।

अपने प्रोफेशन सफर के बारे में बताए और इस दौरान आपकी क्या क्या उपलब्धियां रही

मैंने ईशा अस्पताल, वडोदरा से नवजात शिशु विज्ञान में फेलोशिप पूरी की। इसके बाद मैं आनंद, गुजरात में डॉ. नैना पटेल के प्रतिष्ठित आकांक्षा अस्पताल में काम करने चला गया । वहां से मैं देहरादून आया और डॉ. विपिन और हंस वैश सर के मेहर अस्पताल में काम किया। वहां दो साल काम करने के बाद मैंने इंदिरा आईवीएफ, देहरादून में ज्वाइन किया क्योंकि वे अपने अनमोल आईवीएफ शिशुओं के लिए अत्याधुनिक एनआईसीयू शुरू कर रहे थे।

चिकित्सा के क्षेत्र में आपका कोई यादगार अनुभव

मेरे पेशेवर जीवन में कई यादगार पल रहे हैं। हर बार जब हम समय से पहले जन्मे शिशुओं को उनके माता-पिता को सौंपते हैं, तो यह एक अद्भुत अनुभव होता है, खासकर तब जब माता-पिता अपना सारा भरोसा और उम्मीद हम पर टिका देते हैं। इंदिरा आईवीएफ में हर बच्चा कई वर्षों के दर्द और माता-पिता बनने की उम्मीद के बाद जन्म लेता है।

दिव्य हिमगिरि के पाठकों को क्या संदेश देना चाहेंगे

मैं अपने प्रिय पाठकों से कहना चाहूंगा कि इस आधुनिक व्यस्त जीवनशैली में अपने स्वास्थ्य के लिए समय निकालें, स्वस्थ भोजन करें, जंक फूड से बचें और नियमित रूप से व्यायाम करें।

देवभूमि में आस्था का महापर्व
चारधाम यात्रा का शंखनाद

शंभू नाथ गौतम
वरिष्ठ पत्रकार

देवभूमि उत्तराखंड में 19 अप्रैल को अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर बहुप्रतीक्षित चारधाम यात्रा का विधिवत शंखनाद हो रहा है। रविवार को गंगोत्री और यमुनोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोल दिए जाएंगे, जिसके साथ ही आस्था का यह महापर्व शुरू हो गया है। 22 अप्रैल को केदारनाथ और 23 अप्रैल को बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ यात्रा पूर्ण रूप से गति पकड़ेगी। इस बार यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है और अनुमान है कि पिछले वर्षों के रिकॉर्ड भी टूट सकते हैं। चारधाम यात्रा न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था की धुरी भी मानी जाती है, जिससे लाखों लोगों की आजीविका जुड़ी है। बेहतर सड़क संपर्क, खासकर दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के चलते इस बार यात्रियों की संख्या में और वृद्धि की उम्मीद है। सरकार ने 'केयरिंग कैपेसिटी' की बाध्यता हटाते हुए अधिक से अधिक श्रद्धालुओं को दर्शन कराने का लक्ष्य रखा है। साथ ही रजिस्ट्रेशन अनिवार्य किया गया है और अब तक लाखों श्रद्धालु पंजीकरण करा चुके हैं। यात्रा मार्ग पर स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत किया गया है, वहीं सुरक्षा और हेली सेवाओं को भी सुदृढ़ बनाया गया है। कुल मिलाकर, देवभूमि में आस्था, उत्साह और आर्थिक गतिविधियों का संगम एक बार फिर चरम पर है।

देवभूमि उत्तराखंड की पवित्र वादियों में एक बार फिर आस्था का महासंगम उमड़ने को तैयार है। हिमालय की ऊंची चोटियों के बीच गूंजने वाली घंटियों की ध्वनि मानो श्रद्धालुओं को बुलावा दे रही है। नदियों की कल-कल, मंदिरों की आरती और भक्तों की जयकार से पूरा वातावरण आध्यात्मिक रंग में रंगने वाला है। हर साल की तरह इस बार भी चारधाम यात्रा सिर्फ एक यात्रा नहीं, बल्कि आस्था का उत्सव बनकर सामने आ रही है। देश के कोने-कोने से श्रद्धालु इस दिव्य यात्रा का हिस्सा बनने के लिए उत्सुक हैं। गांव-शहरों से निकलकर लोग अपने आराध्य के दर्शन के लिए लंबी यात्रा पर निकलने की तैयारी में हैं। यह सिर्फ धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि सदियों से चली आ रही विश्वास की वह डोर है जो हर साल लोगों को यहां खींच लाती है। देवभूमि की मिट्टी में रची-बसी आस्था एक बार फिर अपने चरम पर पहुंचने वाली है। चारधाम यात्रा के शुरू होते ही पूरा प्रदेश मानो एक बड़े पर्व में बदल जाता है। हर रास्ता, हर पड़ाव और हर धाम श्रद्धा से सराबोर नजर आता है। स्थानीय लोगों के लिए यह समय सिर्फ भक्ति का नहीं, बल्कि उम्मीदों और रोजगार का भी होता है। यात्रा के साथ ही प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलती है। होटल, ढाबे, परिवहन और छोटे कारोबारियों के लिए यह सबसे अहम समय होता है। सरकार और प्रशासन भी इस महायात्रा को सफल बनाने में जुटे हैं। हर साल की तरह इस बार भी व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने की कोशिश की गई है। सुरक्षा, स्वास्थ्य और सुविधाओं को लेकर विशेष तैयारियां की गई हैं। अक्षय तृतीया के शुभ अवसर पर 19 अप्रैल से गंगोत्री धाम और यमुनोत्री धाम के कपाट श्रद्धालुओं के लिए खोले जाएंगे और इसके साथ ही चारधाम यात्रा विधिवत शुरू हो जाएगी। इसके बाद 22 अप्रैल को केदारनाथ धाम और 23 अप्रैल को बद्रीनाथ धाम के कपाट खुलेंगे, जिससे यात्रा पूरी तरह गति पकड़ लेगी। इस वर्ष यात्रा को लेकर श्रद्धालुओं

में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है और अनुमान लगाया जा रहा है कि पिछले वर्षों के मुकाबले इस बार अधिक संख्या में श्रद्धालु देवभूमि पहुंचेंगे। अगर आप इस बार चारधाम यात्रा की प्लानिंग कर रहे हैं, तो घर से निकलने से पहले परिवहन विभाग की नई गाइडलाइन जरूर पढ़ लें। यात्रा को सुरक्षित बनाने और हादसों को रोकने के लिए सरकार ने नियमों को बेहद सख्त कर दिया है। अब न तो आप रात के अंधेरे में पहाड़ों पर मनमाने तरीके से सफर कर पाएंगे और न ही बिना फिटनेस जांच के वाहन यात्रा मार्ग पर चल सकेंगे। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि पर्वतीय मार्गों पर निर्धारित समय के भीतर ही वाहनों की आवाजाही की अनुमति होगी, ताकि दुर्घटनाओं की आशंका कम की जा सके। इसके साथ ही सभी व्यावसायिक वाहनों के लिए फिटनेस सर्टिफिकेट, परमिट और ड्राइवर का अनुभव अनिवार्य किया गया है। ओवरलोडिंग, तेज रफ्तार और लापरवाही से वाहन चलाने पर सख्त कार्रवाई की चेतावनी दी गई है। यात्रा मार्ग पर जगह-जगह चेकिंग अभियान चलाए जाएंगे और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना लगाने के साथ वाहन भी सीज किए जा सकते हैं। ड्राइवरों के लिए पर्याप्त विश्राम और स्वास्थ्य जांच की भी व्यवस्था की गई है, ताकि थकान के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। सरकार और परिवहन विभाग का उद्देश्य साफ है श्रद्धालु सुरक्षित रहें और चारधाम यात्रा बिना किसी बाधा के सुचारु रूप से संपन्न हो। ऐसे में यात्रियों को भी चाहिए कि वे नियमों का पालन करें और अपनी यात्रा को सुरक्षित और सुखद बनाएं।

चारधाम यात्रा उत्तराखंड की धार्मिक पहचान के साथ आर्थिक रीढ़ भी

चारधाम यात्रा उत्तराखंड की धार्मिक पहचान के साथ-साथ उसकी आर्थिक रीढ़ भी मानी जाती है। लाखों लोगों की आजीविका इस यात्रा से सीधे तौर पर जुड़ी हुई है। वर्ष 2023 में जहां रिकॉर्ड 56 लाख श्रद्धालु चारधाम पहुंचे थे, वहीं 2024 में यह संख्या 48 लाख और 2025 में 51 लाख रही। वर्ष 2026 में एक बार फिर रिकॉर्ड संख्या में यात्रियों के आने की उम्मीद जताई जा रही है। इसका एक बड़ा कारण बेहतर कनेक्टिविटी है, खासकर दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे के शुरू होने से यात्रा पहले की तुलना में अधिक आसान और तेज हो गई है। राज्य सरकार ने इस बार बड़ा फैसला लेते हुए धामों की 'केयरिंग कैपेसिटी' की बाध्यता समाप्त कर दी है, जिससे अधिक से अधिक श्रद्धालु दर्शन कर सकेंगे। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि कोई भी श्रद्धालु बिना दर्शन के वापस न लौटे और यात्रा को सुचारु एवं सुरक्षित ढंग से संचालित किया जाए। हालांकि, इस बार कुछ नए नियम भी लागू किए गए हैं। बद्रीनाथ धाम और केदारनाथ धाम परिसर में मोबाइल फोन के उपयोग पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया गया है। इसके साथ ही यात्रा के लिए पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। 6 मार्च 2026 से शुरू हुई इस प्रक्रिया के तहत 15 अप्रैल तक 17 लाख से अधिक श्रद्धालु पंजीकरण करा चुके हैं, जिनमें सबसे अधिक संख्या केदारनाथ और बद्रीनाथ जाने वालों की है। स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर भी इस बार विशेष ध्यान दिया गया है। यात्रा मार्ग पर 13 स्क्रीनिंग पॉइंट, 24 मेडिकल रिलीफ पोस्ट और 100 से अधिक स्वास्थ्य मित्र तैनात किए जा रहे हैं। इसके अलावा 552 डॉक्टरों और 228 विशेषज्ञ चिकित्सकों की तैनाती रोस्टर के आधार पर की जाएगी, ताकि आपात स्थिति में तत्काल उपचार उपलब्ध कराया जा सके। हवाई सेवाओं को भी इस बार और बेहतर बनाया गया है। केदारनाथ धाम के लिए हेली सेवाएं पहले की तरह जारी रहेंगी, जिसके लिए 8 हेलीकॉप्टर ऑपरेटर्स का चयन किया गया है। गुप्तकाशी, फाटा और सिरसी से हेली सेवाएं संचालित होंगी। इसके साथ ही इस बार गोचर से बद्रीनाथ तक हेली सेवा शुरू करने की योजना भी बनाई गई है। पिछले वर्ष हुई हेली दुर्घटनाओं को ध्यान में रखते हुए इस बार सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। एयर ट्रैफिक कंट्रोल और ऑटोमेटिक वेदर सिस्टम की मदद से उड़ानों की निगरानी और मौसम की सटीक जानकारी सुनिश्चित की जाएगी।

ऋषिकेश से सीएम धामी ने किया चारधाम यात्रा का औपचारिक शुभारंभ

चारधाम यात्रा की शुरुआत से पहले ही पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को ऋषिकेश स्थित ट्रांजिट कैंप से यात्रा का औपचारिक शुभारंभ किया और यात्री बसों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि चारधाम यात्रा उत्तराखंड की आस्था, संस्कृति और अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार है और सरकार की प्राथमिकता है कि हर श्रद्धालु को सुरक्षित, सुगम और व्यवस्थित दर्शन की सुविधा मिले। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि किसी भी स्तर पर लापरवाही न बरती जाए और सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रखी जाएं, ताकि यात्रा बिना किसी बाधा के सफलतापूर्वक संचालित हो सके। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि इस बार यात्रा को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिए तकनीक का भी उपयोग किया जा रहा है और स्वास्थ्य, सुरक्षा तथा यातायात प्रबंधन को लेकर विशेष रणनीति तैयार की गई है। उन्होंने श्रद्धालुओं से अपील की कि वे यात्रा से पहले पंजीकरण अवश्य कराएं और प्रशासन द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें, ताकि यात्रा सुगम बनी रहे। वहीं, श्री बदरीनाथ केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) द्वारा लिए गए निर्णय के अनुसार बद्रीनाथ धाम और केदारनाथ धाम में गैर-हिंदुओं के प्रवेश पर रोक रहेगी। इसी तरह गंगोत्री धाम और यमुनोत्री धाम में भी गैर-सनातनियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लागू किया गया है। मंदिर में प्रवेश से पहले श्रद्धालुओं को पंचगव्य ग्रहण करना अनिवार्य होगा, जिससे धार्मिक परंपराओं की पवित्रता बनाए रखने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा मंदिर परिसरों में मोबाइल फोन, फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी पर भी सख्त प्रतिबंध लगाया गया है। बद्रीनाथ और केदारनाथ मंदिर के 50 से 60 मीटर के दायरे में किसी भी तरह की रिकॉर्डिंग पूरी तरह निषिद्ध रहेगी। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मंदिर समितियों द्वारा लॉक रूम की व्यवस्था की जा रही है, जहां वे अपने मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान सुरक्षित रख सकेंगे। चारधाम यात्रा को इस बार अधिक अनुशासित, सुरक्षित और आध्यात्मिक माहौल में संपन्न कराने के लिए सरकार और प्रशासन पूरी तरह सतर्क नजर आ रहा है, जिससे आने वाले दिनों में देवभूमि में आस्था और व्यवस्था का संतुलित संगम देखने को मिलेगा।

उत्तराखंडियत का आत्मघाती चेहरा हैं हरीश रावत

हरीश रावत ने फेसबुक में अपनी एक पोस्ट में लिखा कि ''मैं 2002 में मुख्यमंत्री पद का स्वाभाविक दावेदार था मगर निर्णय श्री नारायण दत्त तिवारी जी के पक्ष में हुआ। जिन्होंने कभी कहा था कि राज्य मेरी लाश की कीमत पर बनेगा।'' हरीश रावत की इस पोस्ट से उत्तराखंडियत को बहुत नुकसान पहुंचा हैं। पृथक राज्य निर्माण के आंदोलन में आहुति देने वाले हजारों-लाखों आंदोलनकारियों और शहीद परिवारों की भावनाओं को हरीश रावत ने एक झटके में उत्तराखंड विरोधी बता दिया। अब हरीश रावत की कही इस बात का संदर्भ कहीं नहीं मिलता सिवाय उनके शब्दों के। पेश है हरीश रावत की पोस्ट से उत्तराखंडियत को पहुंचे आघात पर एक रिपोर्ट..

कुँवर राज अस्थाना

पिछले कुछ दिनों से उत्तराखंड में विपक्ष के वरिष्ठ नेता 77 वर्षीय नेता हरीश रावत चर्चाओं में हैं। वैसे तो हरीश रावत 2014 से ही जब वह उत्तराखंड के मुख्यमंत्री बने, किसी न किसी बात को लेकर चर्चाओं में एक खलनायक के रूप में चर्चित रहे हैं। चाहे उनके कार्यकाल में डेनिस शराब घोटाला हो, नेशनल हाइवे मुआवजा घोटाला हो या फिर खनन घोटाला हो। लेकिन इसबार वह चर्चाओं में हैं काँग्रेस में रहकर काँग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोलने को लेकर। अपनी हठधर्मिता को लेकर नकारात्मक राजनीति के धुरंधर माने जाने वाले 77 वर्षीय राजनेता उम्र के इस दौर में आकर उत्तराखंड पृथक राज्य निर्माण में योगदान देने वाले उत्तराखंड के निर्माता राजनेताओं और उनके तमाम हजारों राज्य आंदोलनकारी समर्थकों एवं शहीद परिवारों को उत्तराखंड विरोधी बताकर उत्तराखंडियत को बदनाम कर रहे हैं।

एक अंसतुष्ट गुटनायक के रूप में काँग्रेस के खिलाफ बयानबाजी करते हुए हरीश रावत ने फेसबुक में अपनी एक पोस्ट में लिखा कि ''मैं 2002 में मुख्यमंत्री पद का स्वाभाविक दावेदार था मगर निर्णय श्री नारायण दत्त तिवारी जी के पक्ष में हुआ। जिन्होंने कभी कहा था कि राज्य मेरी लाश की कीमत पर बनेगा, जिन्होंने उत्तराखंड से पीसीसी का मेंबर बनने का अनुरोध भी अस्वीकार कर दिया था, वही मुख्यमंत्री बने और पाँच साल शानदार तरीके से सरकार चली, और कभी सरकार के अस्तित्व को खतरा पैदा हो-ऐसी स्थिति हमने आने नहीं दी।'' हो सकता है कि हरीश रावत ने चुनावी समर में यह बात फेसबुक पर इसलिए लिखी हो कि कांग्रेस उनके दबाव में आ जाए और उनके सामने नतमस्तक हो जाए। लेकिन उनकी इस पोस्ट से उत्तराखंडियत को बहुत नुकसान पहुंचा हैं। पृथक राज्य निर्माण के आंदोलन में आहुति

देने वाले हजारों-लाखों आंदोलनकारियों और शहीद परिवारों की भावनाओं को हरीश रावत ने एक झटके में उत्तराखंड विरोधी बता दिया।

अब हरीश रावत की कही इस बात का संदर्भ कहीं नहीं मिलता सिवाय उनके शब्दों के। लेकिन जब इतिहास के पन्ने उलटे पलटे जाएंगे तो पता चलता है कि रामपुर तिराहा कांड के समय उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री थे और उसको कांग्रेस पार्टी के 28 विधायकों का बाहर से समर्थन था। 01 सितंबर 1994 को खटीमा में आंदोलनकारियों पर पुलिस गोली से 07 तथा 02 सितंबर को मसूरी में पुलिस गोली से 06 आंदोलनकारी शहीद हो गए थे। नारायण दत्त तिवारी ने इस घटना के विरोध में तत्कालीन प्रधानमंत्री नरसिंह राव से मुलायम सिंह यादव सरकार से समर्थन वापिस लेने को दबाव बनाया। नारायण दत्त तिवारी उस समय उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे। नारायण दत्त तिवारी ने प्रदेश कांग्रेस कमेटी में मुलायम सिंह यादव सरकार से समर्थन वापिस लेने का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास कराया लेकिन पीवी नरसिंह राव ने उस प्रस्ताव की उपेक्षा की। नारायण दत्त तिवारी ने 05 सितंबरए 1994 को लखनऊ में शहीद स्मारक पर आंदोलनकारियों पर हुए बर्बर गोलीकांड के विरोध में मुलायम सिंह यादव सरकार के खिलाफ विशाल धरना प्रदर्शन किया था। नारायण दत्त तिवारी मसूरी और खटीमा में आंदोलनकारियों पर हुए पुलिसिया गोलीबारी से इस कदर व्यथित हुए कि उन्होंने 26 सितंबर 1994 को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। 02 अक्टूबर 1994 को रामपुर तिराहा कांड हो गया, पुलिस की बर्बर कार्यवाही में 15 आंदोलनकारी मौके पर ही शहीद हो गए। महिलाओं से बालात्कार तक हुआ। नारायण दत्त तिवारी ने नवंबर 1994 में मुजफ्फरनगर में इस हिंसक घटना के खिलाफ एक अभूतपूर्व रैली का आयोजन किया। 5 लाख लोगों की भीड़ ने रामपुर तिराहा पर नारायण दत्त तिवारी को सुनने के लिए शाम तक इंतजार किया था। 01 फरवरी 1995 में लखनऊ में नारायणदत्त तिवारी के नेतृत्व में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता अर्जुन सिंइ, मोहसिना किदवई, शीला दीक्षित, केदारनाथ सिंह, माखनलाल फोतेदार आदि ने मुलायम सिंह यादव सरकार के खिलाफ राज्य व्यापी सत्याग्रह का बिगुल बजाया। लेकिन इन सभी विरोध के बावजूद पीवी नरसिंह राव ने मुलायम सिंह यादव से समर्थन वापिस नहीं लिया। खटीमा, मसूरी और रामपुर तिराहा बर्बर गोलीकांड के बाद भी मुलायम सिंह यादव की सरकार निर्बाध रूप से कांग्रेस के समर्थन से चलती रही। मुलायम सिंह यादव की सरकार गेस्ट हाउस कांड के बाद मायावती द्वारा समर्थन वापिस लेने के कारण जून 1995 में गिरी थी।

हरीश रावत के नेतृत्व का एक आकलन किया जा सकता है। जब वह मुख्यमंत्री बने तो उनकी पसंद के और उनके खास तत्कालीन प्रदेशाध्यक्ष किशोर उपाध्याय से उनका राजनैतिक बैर हो गया। उनके नेतृत्व में ही गुटबाजी के कारण एक दर्जन कांग्रेस विधायक कांग्रेस छोडकर भाजपा में शामिल हो गए। किसी समय उनके खास रहे प्रीतम सिंह जब प्रदेशाध्यक्ष बने तो उनके साथ भी हरीश रावत का राजनैतिक बैर हो गया। प्रीतम के बाद प्रदेशाध्यक्ष बने उनके सगे रिश्तेदार करन माहरा से भी उनका तालमेल नहीं बना। हरीश रावत की कृपा से प्रदेशाध्यक्ष बने गणेश गोदियाल से भी उनका छत्तीस का आंकडा हो गया। उनके राजनैतिक सलाहकार रहे रणजीत रावत के साथ भी उनका विरोध हो गया। यदि आप कुमायूं क्षेत्र में कांग्रेस की राजनीति का सिंहावलोकन करें तो तीन दर्जन जनाधार वाले ऐसे नेताओं के नाम सामने आएंगे जिनके उभरते नेतृत्व को हरीश रावत के अपनी महत्वाकांक्षाओं के नीचें रौंद दिया।

तो सवाल तो उत्तराखंडियत को बदनाम करने वाले हरीश रावत से बनता है कि उस वक्त वो कहां थे? वो पीवी नरसिंह राव के साथ खड़े थे, जो मुलायम सिंह यादव को संरक्षण और समर्थन दे रहे थे या फिर उत्तराखंड के शहीद आंदोलनकारियों के पक्ष में खड़े थे?

यहां यह उल्लेख किया जाना समीचीन होगा कि 10-11 जून, 1994 में दिल्ली में पीवी नरसिंह राव की अध्यक्षता में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का विशेष महाअधिवेशन बुलाया गया था। महाधिवेशन में नारायण दत्त तिवारी ने पृथक उत्तराखंड राज्य के निर्माण के लिए राजनैतिक प्रस्ताव पेश किया था, लेकिन केंद्रीय नेतृत्व ने इसे स्वीकार नहीं किया। यही नहीं इस अधिवेशन में झारखंड और छत्तीसगढ़ पर भी कोई प्रस्ताव पारित नहीं हुआ था। जबकि उस वक्त उत्तर प्रदेश का पर्वतीय क्षेत्र पृथक राज्य आंदोलन में झुलस रहा था। दबाव में अगस्त के अंतिम सप्ताह में पीवी नरसिंह राव ने प्रधानमंत्री आवास में कुमायूं और गढ़वाल के कांग्रेसी नेताओं और अन्य दलों के साथ अलग-अलग मुलाकात की और उत्तराखंड पृथक राज्य आंदोलन पर विचार किया था। कांग्रेस नेताओं की इस बैठक में नारायण दत्त तिवारी, हरीश रावत, रंजीत सिंह रावत, विजय बहुगुणा, प्रीतम सिंह, सुबोध उनियाल आदि बड़ी संख्या में कांग्रेस के नेता भी शामिल थे। पृथक राज्य गठन के मुद्दे पर जब नारायण दत्त तिवारी को बोलने का मौका आया तो नारायण दत्त तिवारी ने कहा था ''मैं तो विकास का सिपाही हूँ और वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए छोटे राज्यों के गठन का पक्षधर हूँ। उन्होंने अपना व्यक्तव्य आगे बढ़ाते हुए कहा - संयुक्त प्रांत और बाद में उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री श्री गोविंद बल्लभ पंत ने छोटे राज्य यथा उत्तराखंड के पृथक गठन पर कहा था कि यदि किसी ने गंगा-जमुना संस्कृति को विभाजित करने की कोशिश की तो उसे मेरी लाश पर से होकर गुजरना होगा।''

यह इतिहास के पन्नों पर दर्ज है कि हरीश रावत जो उस वक्त उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव सरकार को समर्थन और संरक्षण दे रहे पीवी नरसिंह राव के पक्ष में खड़े थे, ने गोविंद बल्लभ पंत के शब्दों को नारायण दत्त तिवारी के शब्द कहकर प्रचारित किया। उस समय उस बैठक में आंदोलन के साक्षी तथा राज्य निर्माण में अपना योगदान देने वाले उपस्थित तमाम कांग्रेस के नेता इस बात के साक्षी हैं कि जो शब्द हरीश रावत आज स्वर्गीय नारायणदत्त तिवारी के मुंह में डालने का प्रयास कर रहे हैं वो उन्होंने कभी कहे ही नहीं बल्कि पृथक राज्य आंदोलन के समर्थन उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव और अपनी ही पार्टी के मुखिया पीवी नरसिंह राव के खिलाफ अभूतपूर्व विरोध प्रदर्शन किया। इसी विरोध की परिणिति थी कि पीवी नरसिंह राव ने नारायणदत्त तिवारी, एचकेएल भगत, अर्जुन सिंह, एमएल फोतेदान आदि को पार्टी से निष्कासित कर दिया था।

यह दस्तावेज हैं कि गोविंद बल्लभ पंत अखंड उत्तर प्रदेश के पक्षधर थे। पृथक

उत्तराखंड राज्य गठन की मांग संयुक्त प्रांत के समय से हो प्रारंभ हो गई थी और यह मुद्दा गोविंद बल्लभ पंत के सामने भी प्रमुखता से आया था। क्योंकि उस वक्त देश कई हिस्सों में भाषाई और क्षेत्रीय असमानता के आधार पर छोटे राज्यों के गठन की मांग हो रही थी। आज इतिहास को गलत ढंग से पेश करके उत्तराखंडियत की आत्मा पर हरीश रावत ने जो प्रहार किया है इसके उत्तराखंड राज्य निर्माण आंदोलन से जुड़े लोग हरीश रावत को कभी माफ नहीं करेंगे।

इसके उलट यदि हम हरीश रावत के संसदीय कार्यकाल की बात करें तो- हरीश रावत 1980, 1984, 1989 और 2009 के चुनाव में जीते - जब कांग्रेस देशभर में मजबूत लहर पर सवार थी। 2009 में हरिद्वार सीट पर उनकी जीत भी उसी व्यापक राजनीतिक माहौल का हिस्सा थी, जब उत्तराखंड की सभी लोकसभा सीटें कांग्रेस ने जीती थीं।

जिस संदर्भ में हरीश रावत ने नारायणदत्त तिवारी पर आरोप लगाया है- विधानसभा 2002 का उदाहरण भी यही दिखाता है कि कांग्रेस की जीत कई बार व्यक्तिगत नेतृत्व से ज्यादा परिस्थितियों के कारण हुई - यदि सतपाल महाराज उस समय इस्तीफे का दबाब बनाकर 7 टिकट नहीं बदलवाते तो कांग्रेस सत्ता में नहीं आ सकती थी। 2012 में भी कांग्रेस भाजपा सरकार के खिलाफ लहर पर चुनाव जीतकर आई थी।

हरीश रावत ने यह संदर्भ नहीं लिखा कि 2014 में उनको सरकार थाली में सजाकर दी गई थी। यानि नेतृत्व परिवर्तन करके उनको मुख्यमंत्री बनाया गया था। उनकी असली परीक्षा आई - 2017 और 2022 में - तब क्या हुआ? पार्टी हारी, और मुख्यमंत्री का चेहरा खुद भी दोनो विधानसभा चुनाव नहीं जीत पाया। यही नहीं 2017 में हरीश रावत बतौर मुख्यमंत्री दो जगह से चुनाव हारे। तो सवाल यह है: जो नेता खुद अपनी सीट नहीं बचा पाया, वह पूरी पार्टी को कैसे जिताएगा?

उत्तराखंड में आज कांग्रेस के जो नेता जनता के बीच जाकर अपनी उपलब्धियां गिना पाते हैं, उसका बड़ा आधार नारायण दत्त तिवारी के मुख्यमंत्री काल में किए गए विकास कार्य हैं। उन्हीं के समय की नीतियां और परियोजनाएं आज भी कांग्रेस की राजनीतिक पूंजी बनी हुई हैं। लेकिन हरीश रावत का नारायणदत्त तिवारी- जिसे उत्तराखंड का निर्माता- कहा जाता है, को उत्तराखंड विरोधी बताना राज्य के विकास में सलंग्न हजारों लाखों उत्तराखंडियों की भावनाओं पर प्रहार है।

इसके उलट, हरीश रावत द्वारा यह दावा करना कि उन्होंने कांग्रेस को मजबूत किया, वास्तविकता से परे लगता है। उनके राजनीतिक कार्यकाल पर नजर डालें तो बार-बार गुटबाजी की शिकायतें सामने आती रही हैं, जिसने संगठन को मजबूत करने के बजाय कमजोर किया। उनपर आरोप यह भी रहे हैं कि उन्होंने कई मौकों पर अपने ही पार्टी उम्मीदवारों के खिलाफ अपने समर्थकों को सक्रिय किया, खासकर तब जब उम्मीदवार उनकी पसंद के नहीं होते थे। इस तरह की अंदरूनी खींचतान ने न केवल चुनावी प्रदर्शन को प्रभावित किया, बल्कि कार्यकर्ताओं का मनोबल भी गिराया।

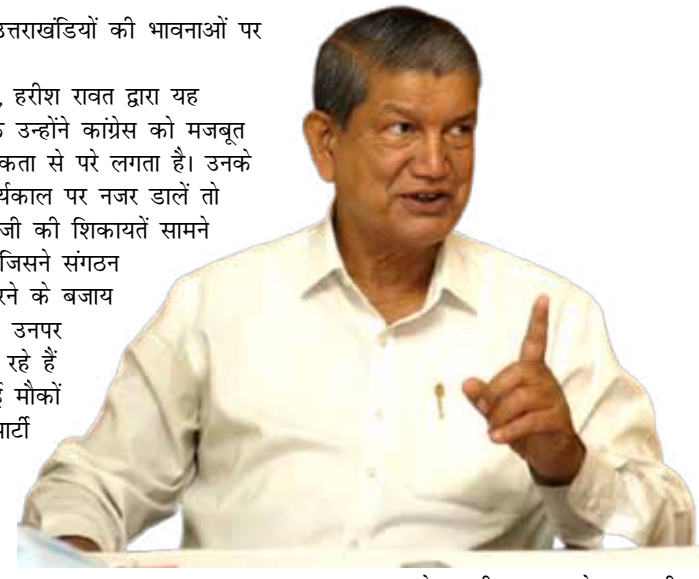

सबसे गंभीर प्रभाव यह रहा कि इसी गुटबाजी और आंतरिक असंतोष के चलते कांग्रेस के कई जनाधार वाले नेता पार्टी छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए। यह केवल व्यक्तिगत नुकसान नहीं था, बल्कि संगठनात्मक क्षरण का स्पष्ट संकेत भी था। कांग्रेस ने हरीश रावत को सांसद, राज्य सभा, केंद्रीय मंत्री और मुख्यमंत्री तक बनाया। कांग्रेस ने रावत को सबकुछ दिया लेकिन रावत ने कांग्रेस को गुटबाजी दी।

उत्तराखंड कांग्रेस की सबसे बड़ी समस्या भाजपा नहीं है। उसकी सबसे बड़ी समस्या उसकी अपनी अंदरूनी राजनीति है-जहां व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा संगठन से बड़ी हो जाती है। हरीश रावत के नेतृत्व का एक आकलन किया जा सकता है। जब वह मुख्यमंत्री बने तो उनकी पसंद के और उनके खास तत्कालीन प्रदेशाध्यक्ष किशोर उपाध्याय से उनका राजनैतिक बैर हो गया। उनके नेतृत्व में ही गुटबाजी के कारण एक दर्जन कांग्रेस विधायक कांग्रेस छोडकर भाजपा में शामिल हो गए। किसी समय उनके खास रहे प्रीतम सिंह जब प्रदेशाध्यक्ष बने तो उनके साथ भी हरीश रावत का राजनैतिक बैर हो गया। प्रीतम के बाद प्रदेशाध्यक्ष बने उनके सगे रिश्तेदार करन माहरा से भी उनका तालमेल नहीं बना। हरीश रावत की कृपा से प्रदेशाध्यक्ष बने गणेश गोदियाल से भी उनका छत्तीस का आंकडा हो गया। उनके राजनैतिक सलाहकार रहे रणजीत रावत के साथ भी उनका विरोध हो गया। यदि आप कुमायूं क्षेत्र में कांग्रेस की राजनीति का सिंहावलोकन करें तो तीन दर्जन जनाधार वाले ऐसे नेताओं के नाम सामने आएंगे जिनके उभरते नेतृत्व को हरीश रावत के अपनी महत्वाकांक्षाओं के नीचें रौंद दिया। अब बात करें कि हरीश रावत के समय उनके किए गये कार्यों की। उन्होंने कई योजनाएं चलाई जिनमें मेरा गांव, मेरा खेत जैसी धरातली योजनाएं भी शामिल हैं- लेकिन उनकी सरकार में जिन योजनाओं पर युद्धस्तर पर काम हुआ उनमें डेनिस शराब योजना, खनन योजना, और नेशनल हाइवे फर्जी मुआवजा योजना शामिल थी। यही नहीं हरीश रावत दो मामलों में जांच से घिरे हैं- एक तो स्टिंग ऑपरेशन की सीबीआई जांच है, जिसमें वो अपनी सरकार बचाने के लिए भ्रष्टाचार करने के लिए आमंत्रण दे रहे हैं। दूसरा नेशनल हाइवे घोटाला है जिसमें 5 करोड़ की एक मनी ट्रांजक्शन उनके अधिकारिक सहयोगी के पास पकड़ी गई है।

तो जांच में फंसे हरीश रावत भाजपा के हाथों को खिलौना बने हुए हैं, तभी वह कांग्रेस आघात पहुंचाने के लिए उत्तराखंड के निर्माता राजनीतिज्ञों को राज्य विरोधी बता रहे हैं। अब अगर कांग्रेस को वाकई वापसी करनी है, तो उसे यह तय करना होगा कि वह अतीत के कामों पर राजनीति करेगी या वर्तमान के नेतृत्व पर भरोसा। क्योंकि अभी जो दिख रहा है, वह साफ संकेत देता है, यह लड़ाई जीतने की नहीं, खुद को हराने की बन चुकी है।

(लेखक राजनीतिक समीक्षक एवं दिव्य हिमगिरि के संपादक तथा नारायणदत्त तिवारी के जीवनीकार है)

सीबीएसई 10वीं रिजल्ट में देहरादून का प्रदर्शन बेहतर लेकिन रैंकिंग फिसली

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने बुधवार 15 अप्रैल को 10वीं का रिजल्ट इस बार तय समय से पहले जारी कर दिया, जिसमें देशभर में 93.70% छात्र सफल रहे। नतीजों में एक बार फिर लड़कियों ने बाजी मारी, उनका पास प्रतिशत 94.99% रहा, जबकि लड़कों का 92.69% और ट्रांसजेंडर छात्रों का 87.50% दर्ज किया गया। क्षेत्रवार प्रदर्शन में त्रिवेंद्रम और विजयवाड़ा सबसे आगे रहे, जहां 99.79% छात्र पास हुए। वहीं देहरादून रीजन का परिणाम 91.59% रहा, जो पिछले साल से बेहतर है, लेकिन रैंकिंग में यह 16वें स्थान पर खिसक गया। स्थानीय स्तर पर छात्रों का प्रदर्शन शानदार रहा, रुड़की, चकराता और रुद्रपुर में कई छात्रों ने 98% से अधिक अंक हासिल किए, जिसमें छात्राओं का दबदबा देखने को मिला। इस साल 24.71 लाख से ज्यादा छात्र परीक्षा में शामिल हुए। 55 हजार से अधिक छात्रों ने 95% से ऊपर अंक हासिल किए, जबकि 2.21 लाख से ज्यादा छात्रों ने 10% से अधिक स्कोर किया। सीबीएसई ने इस बार 10वीं की परीक्षा दो चरणों में आयोजित करने की नई व्यवस्था लागू की है, जिसके तहत दूसरा चरण मई में होगा। दिव्य हिमगिरि रिपोर्ट

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने बुधवार, 15 अप्रैल को इस साल 10वीं के नतीजे उम्मीद से पहले जारी कर दिए हैं, और आंकड़े एक बार फिर छात्रों की मजबूत तैयारी की कहानी बता रहे हैं। देशभर में शानदार सफलता दर के बीच लड़कियों ने बाजी मारी है, जबकि अलग-अलग क्षेत्रों का प्रदर्शन भी चर्चा में है। देहरादून रीजन ने पास प्रतिशत में सुधार तो किया, लेकिन रैंकिंग में गिरावट ने नई बहस छेड़ दी है। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने सीबीएसई 10वीं रिजल्ट 2026 जारी कर दिया है। सीबीएसई 10वीं रिजल्ट में 93.70 प्रतिशत विद्यार्थी सफल रहे हैं। त्रिवेंद्रम व विजयवाड़ा रीजन का रिजल्ट सबसे अच्छा रहा है। दोनों का पास प्रतिशत 99.79 फीसदी रहा। लड़कियों ने लड़कों से बेहतर प्रदर्शन किया है। उनका पास प्रतिशत 94.99% रहा। लड़कों का पास प्रतिशत 92.69% दर्ज किया गया। ट्रांसजेंडर छात्रों का पास प्रतिशत 87.50% रहा। जल्दी परिणाम जारी करने का एक मुख्य कारण यह भी है कि इस साल से 10वीं के लिए दो बार परीक्षाओं का आयोजन किया जाना है, जिसका दूसरा चरण मई में प्रस्तावित है। वहीं इस बार देहरादून रीजन का ओवरऑल रिजल्ट 91.49% रहा है, जो पिछले साल (90.97%) के मुकाबले थोड़ा बेहतर है। हालांकि, देश के कुल 22 संभागों (रीजन्स) में देहरादून इस बार खिसककर 16वें स्थान पर आ गया है, जबकि पिछले साल 17 संभागों में यह 13वें स्थान पर था। परीक्षा परिणामों में एक बार फिर बेटियों ने अपना दबदबा कायम रखा है। रुड़की और चकराता से लेकर रुद्रपुर तक, टॉपर्स की लिस्ट में छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन किया है। रुड़की के माउंट लिटेरा स्कूल की निशिता ने 99.2% अंक हासिल कर स्कूल का नाम रोशन किया है। इसी स्कूल की आयशा ने 98.8% अंकों के साथ दूसरा स्थान पाया। वहीं, सीनियर सेकेंडरी स्कूल की चार छात्राओं ने 98.2% अंक हासिल कर अपनी मेधा का परिचय दिया। उधर, चकराता के जौनसार पब्लिक स्कूल की छात्रा स्वर्णिका राणा ने भी 99.2% का जादुई आंकड़ा छूकर स्कूल टॉप किया। बुधवार को जैसे ही रिजल्ट घोषित हुआ, रुद्रपुर शहर के स्कूलों में ढोल-नगाड़ों और मिठाइयों के साथ जश्न शुरू हो गया। शहर के कई छात्रों ने 98% से अधिक अंक लाकर उत्कृष्टता का प्रमाण दिया है। जेपीएस पब्लिक स्कूल के अंश श्रीवास्तव ने 99% अंक लाकर परचम लहराया। माही सिंह और प्रत्यूष नंदा 98.8% अंकों के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रहे। दिल्ली पब्लिक स्कूल की हर्षा अरिप्रसाथ ने पांच विषयों में 100 में से 100 अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान पाया। वंश कौशिक 98.8% के साथ दूसरे और अनमोल बर्तवाल 98.6% के साथ तीसरे स्थान पर रहे। जवाहर नवोदय विद्यालय के काव्य चौहान ने 97.8% अंक हासिल कर स्कूल टॉप किया। शुभम शर्मा (95.6%) और अभिषेक (93.3%) ने भी अच्छे अंक प्राप्त किए।

पहली परीक्षा फरवरी-मार्च में आयोजित की गई और दूसरी मई में निर्धारित है

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने बुधवार को घोषणा की कि कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में 93.70 प्रतिशत से अधिक छात्र उत्तीर्ण हुए, जिनमें से 55,000 से अधिक छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक

प्राप्त किए। कुल 2.20 लाख से अधिक छात्रों ने 91 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए। परीक्षा में एक बार फिर लड़कियों ने लड़कों को पीछे छोड़ दिया है। इस बार 94.99 प्रतिशत छात्राएं परीक्षा में उत्तीर्ण हुई हैं। लड़कों का उत्तीर्ण प्रतिशत 92.69 रहा और उभयलिंगी अभ्यर्थियों का उत्तीर्ण प्रतिशत 87.50 रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) की सिफारिशों के अनुरूप, सीबीएसई ने कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा दो चरणों में आयोजित करना शुरू किया है। पहली परीक्षा फरवरी-मार्च में आयोजित की गई और दूसरी मई में निर्धारित है। छात्रों के लिए पहली परीक्षा में शामिल होना अनिवार्य था। सीबीएसई के परीक्षा नियंत्रक संयम भारद्वाज ने कहा, 'परंपरागत रूप से, कक्षा 10वीं के परिणाम मई के मध्य में घोषित किए जाते हैं। हालांकि, इस वर्ष सीबीएसई ने रिकॉर्ड समय में लगभग 1.6 करोड़ उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया और परिणाम सामान्य से एक महीने पहले घोषित किया जा रहा है।' उन्होंने कहा, 'परिणाम घोषित होने के बाद, छात्रों को अपने-अपने विद्यालयों के माध्यम से दूसरी परीक्षा के लिए अपना नामांकन दर्ज कराने के लिए कहा जाएगा।' सीबीएसई के अनुसार, 55,368 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए हैं, जबकि 2,21,574 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए। 1.47 लाख से अधिक अभ्यर्थियों को 'कम्पार्टमेंट' श्रेणी में रखा गया है। क्षेत्रवार, त्रिवेंद्रम और विजयवाड़ा क्षेत्रों ने 99.79 प्रतिशत के साथ सर्वाधिक उत्तीर्ण प्रतिशत दर्ज किया, जबकि गुवाहाटी क्षेत्र का उत्तीर्ण प्रतिशत सबसे कम 85.32 प्रतिशत रहा। दिल्ली का उत्तीर्ण प्रतिशत 97.38 प्रतिशत दर्ज किया गया। संस्थानवार, केंद्रीय विद्यालयों का प्रदर्शन सबसे बेहतर रहा, जहां उत्तीर्ण प्रतिशत 99.57 प्रतिशत दर्ज किया गया। इसके बाद नवोदय विद्यालय 99.42 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर रहे। निजी स्कूलों का उत्तीर्ण प्रतिशत 93.77 प्रतिशत रहा, जबकि सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों का उत्तीर्ण प्रतिशत सबसे कम 91.01 प्रतिशत दर्ज किया गया। सीबीएसई के अनुसार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (सीडब्ल्यूएसएन) का उत्तीर्ण प्रतिशत 96.24 रहा, जिनमें से कम से कम 91 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि इस श्रेणी के 452 छात्रों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किए। बोर्ड के पहले के निर्णय के अनुसार छात्रों के बीच प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए सीबीएसई ने कोई मेरिट सूची घोषित नहीं की है। साथ ही, बोर्ड ने अपने छात्रों को प्रथम, द्वितीय या तृतीय श्रेणी भी प्रदान नहीं की। उन्होंने कहा, 'हालांकि, हम उन शीर्ष 0.1 प्रतिशत छात्रों को मेरिट प्रमाण पत्र जारी करेंगे, जिन्होंने विषयों में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए हैं। मेरिट प्रमाण पत्र दूसरे बोर्ड परीक्षा के बाद संबंधित छात्र के डिजी-लॉकर में उपलब्ध कराया जाएगा।' बोर्ड ने पश्चिम एशिया संकट के कारण उत्पन्न परिस्थितियों के मद्देनजर जहां परीक्षाएं रद्द कर दी गई थीं, वहां परीक्षा देने वाले छात्रों के परिणाम भी घोषित किए। इन छात्रों के लिए सीबीएसई ने वैकल्पिक अंक निर्धारण नीति की घोषणा की थी। भारद्वाज ने कहा, पश्चिम एशियाई देशों में मौजूदा स्थिति को देखते हुए सीबीएसई ने इस क्षेत्र के छात्रों के परिणाम अन्य छात्रों के साथ ही जारी करने का निर्णय लिया है, ताकि सीबीएसई की नीति के अनुरूप निष्पक्षता और समानता सुनिश्चित की जा सके।

दून इंटरनेशनल स्कूल का सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 2025-26 में शानदार प्रदर्शन, 100% परिणाम

दून इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों ने एक बार फिर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए कक्षा 10 CBSE बोर्ड परीक्षा 2026 में उत्कृष्ट परिणाम हासिल किया। 15 अप्रैल 2026 को घोषित परिणामों में विद्यालय का कुल परिणाम शत-प्रतिशत रहा। विद्यालय के कुल 142 विद्यार्थियों ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि 47 विद्यार्थियों ने 85% से अधिक अंक हासिल किए। विषयवार उत्कृष्ट प्रदर्शन में अंग्रेजी और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (**AI**) में 22-22 विद्यार्थियों ने तथा सामाजिक विज्ञान में 8 विद्यार्थियों ने पूरे 100 में से 100 अंक प्राप्त किए। इस वर्ष रुद्राक्ष रावत (रोल नंबर 25113331) ने 99.4% अंक प्राप्त कर न केवल विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया, बल्कि सिटी टॉपर का गौरव भी हासिल किया। विद्यालय के निदेशक श्री एच. एस. मान, प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ ने इस शानदार परिणाम पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा, "हमें खुशी है कि हमारे विद्यार्थियों ने एक बार फिर उम्मीदों पर खरा उतरते हुए बड़ी संख्या में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।" इस उपलब्धि पर विद्यार्थियों और अभिभावकों ने भी हर्ष व्यक्त किया। विद्यालय ने वर्षों से राज्य में लगातार उत्कृष्ट परिणाम देकर अपनी मजबूत पहचान कायम रखी है, जो सभी के लिए प्रेरणादायक है।

कक्षा 10 में दून वैली इंटरनेशनल स्कूल के विद्यार्थियों का बेहतरीन प्रदर्शन

दून वैली इंटरनेशनल स्कूल ठाकुरपुर, देहरादून के कक्षा-10 (सत्र 2025-26) के परीक्षा परिणामों में विद्यार्थियों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया है। इस वर्ष स्कूल का रिजल्ट उत्कृष्ट रहा, जिसमें कई छात्रों ने 90% से अधिक अंक प्राप्त कर संस्थान का नाम रोशन किया। अनुकृत उपाध्याय ने 96.20% अंक हासिल कर पहला स्थान प्राप्त किया। इसके बाद सुहानी रावत (95.60%), तनिषा नेगी (93.20%), आरोही धौंडियाल (92.80%), कार्तिक बसनेट (92.60%) और अंश देवलाल (92.20%) ने शानदार प्रदर्शन किया। नंदिनी मुरारी (92.00%), हर्षवर्धन (91.80%), अनुष्का पंवार (91%), अनुशिखा (90.80%), हर्षित वर्मा (90.60%), भावेश शर्मा (90.20%) और रिया पटवाल (90%) भी 90% क्लब में शामिल रहे। ग्रेसी श्री सहगल (89.60%), विधि रावत (89.60%), संयुक्ता (89.40%), सौरभ राणा (89.40%), अनीशा रावत (88.80%), गुंजन नेगी (88.80%), शिवानी (88.20%), सुमित सजवान (88.20%), विश्वास सिंह (88.20%), मोहित सिंह जीना (87.80%), माही (87.60%), प्रिया (87.60%), अंशिका (87%), शुभंकर सिंह (87%), रिद्धि दीक्षित (86.80%), सना ठाकुर (86.80%), मानसी मेहता (86.40%), सुकृति ध्यानी (86.20%), तनिष्का नेगी (86%), मन्नत (85.80%), संजना मेहरा (85.60%), वैष्णवी पैन्यूली (85.40%) और सृष्टि रावत (85.20%)।

टोंस ब्रिज स्कूल के छात्रों का शानदार प्रदर्शन

देहरादून। टोंस ब्रिज स्कूल के कक्षा 10वीं (सीबीएसई बोर्ड परीक्षा 2026) के परिणाम अत्यंत उत्कृष्ट रहे। प्रियांश कुनियाल और रिद्धि ने 98.4% अंक प्राप्त कर टॉप किया। इस सत्र (2025-26) में 31 छात्रों ने 95% से अधिक तथा 76 छात्रों ने 90% से अधिक अंक हासिल किए। विद्यालय प्रबंधन ने सभी टॉपर्स और विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एक बार फिर से सीबीएसई दसवीं बोर्ड परीक्षा में सेपियंस स्कूल विकासनगर का दबदबा कायम

सेपियंस विद्यालय ने दसवीं बोर्ड परीक्षा में फिर एक बार से सेपियंस विकासनगर की कक्षा दसवीं की छात्रा अनुक्रमा 98.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्तकर सेपियंस विद्यालय विकासनगर के साथ-साथ अपने अभिभावकों तथा अध्यापकगण का नाम रोशन किया। संगत 96.4 द्वितीय स्थान तथा तृप्ति 96.2 प्रतिशत तीसरे स्थान पर रहे। स्पेशल चाइल्ड विदिशा मल ने 89.2% अंक प्राप्त किए।

सीबीएससी बोर्ड परीक्षा में ब्रिस्टल पब्लिक स्कूल का शानदार प्रदर्शन

ब्रिस्टल पब्लिक स्कूल, देहरादून के छात्र गौरव गुप्ता ने सीबीएससी के कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में सर्वाधिक 94% अंक प्राप्त कर स्कूल का नाम रोशन किया है। ब्रिस्टल स्कूल हमेशा से ही बच्चों में शिक्षा और संस्कार का समावेश करता आया है। ब्रिस्टल स्कूल अपने सभी छात्र छात्राओं को परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करने के लिए बधाई देता है।

कसिगा स्कूल में कक्षा 10 का परिणाम शत-प्रतिशत, टॉपर्स ने बढ़ाया मान

कसिगा स्कूल ने कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2026 में एक बार फिर शानदार प्रदर्शन करते हुए अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता की परंपरा को कायम रखा है। विद्यालय ने इस वर्ष भी 100 प्रतिशत परिणाम दर्ज कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। यह उपलब्धि छात्रों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग का परिणाम है। विद्यार्थियों ने विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2026 के टॉपर्स में तनमय शर्मा और अयान इकबाल ने 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। इसके बाद रागिनी शर्मा और पेनियल पैकरा ने 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। वहीं असित श्रीवास्तव 90 प्रतिशत अंक के साथ तीसरे स्थान पर रहे, जिन्होंने अपनी निरंतरता और मेहनत का परिचय दिया। विद्यालय को अपने सेंटम स्कोरर्स पर भी गर्व है। इस वर्ष परीक्षा में शामिल लगभग 17 प्रतिशत छात्रों ने अंग्रेजी, हिंदुस्तानी वोकल म्यूजिक और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे विषयों में 100 प्रतिशत अंक प्राप्त किए, जो उनकी उत्कृष्ट शैक्षणिक क्षमता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, 44 छात्रों ने 90 प्रतिशत या उससे अधिक अंक हासिल किए, जो विद्यालय में उच्च शैक्षणिक मानकों और उत्कृष्टता की संस्कृति को मजबूत करता है। विद्यालय के सीईओ एवं हेड ऑफ स्कूल, डॉ. माधव देव सरस्वत ने सभी छात्रों को उनकी इस उपलब्धि पर बधाई दी। उन्होंने शिक्षकों के निरंतर प्रयासों और अभिभावकों के सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि यह सफलता सामूहिक प्रयास का परिणाम है।

शिक्षांकुर विद्यालय का 10वीं का परिणाम शानदार, 100% रिजल्ट के साथ छात्रों ने किया कमाल

15 अप्रैल 2026 को घोषित हुए कक्षा 10वीं के परीक्षा परिणाम में शिक्षांकुर विद्यालय ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस वर्ष विद्यालय के कुल 57 विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए थे, जिनमें सभी छात्र-छात्राएँ सफल रहे, जिससे विद्यालय का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। इस उपलब्धि में चित्राक्ष सूद ने 99% अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं राज्ञा कॉल ने 98.2% अंक हासिल कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय के लिए यह और भी गर्व का विषय है कि कुल 47 विद्यार्थियों में से 29 विद्यार्थियों ने 10% से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि 14 विद्यार्थियों ने 94% से भी अधिक अंक अर्जित कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। यह शानदार परिणाम विद्यालय की गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा एवं विद्यार्थियों की मेहनत को दर्शाता है, जो पूरे संस्थान के लिए गर्व एवं हर्ष का विषय है।

संत कबीर अकादमी ने कक्षा 10 में हासिल किया 100% परिणाम

संत कबीर अकादमी अपने विद्यार्थियों के कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर अत्यंत गर्व महसूस करता है। इस शानदार परिणाम ने एक बार फिर विद्यालय की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की मजबूत पहचान को सिद्ध किया है। इस वर्ष विद्यालय का परिणाम शत-प्रतिशत रहा। मेधावी विद्यार्थियों में श्रिष्ठी बहुगुणा ने 98.4% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। उनके बाद नंदा ने 97.2% अंक प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया, जबकि पद्मजा गुप्ता ने 97% अंक हासिल कर तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय प्रबंधन एवं प्रधानाचार्य श्री जतिन सेठी ने सभी विद्यार्थियों को इस उपलब्धि पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने शिक्षकों के समर्पण और मेहनत की भी सराहना की, जिनके मार्गदर्शन में यह उत्कृष्ट परिणाम संभव हो सका।

द पेस्टल वीड स्कूल का शानदार प्रदर्शन

द पेस्टल वीड स्कूल, देहरादून ने कक्षा 10वीं बोर्ड परीक्षा (सत्र 2025-26) में उत्कृष्ट परिणाम दर्ज करते हुए एक बार फिर अपनी शैक्षणिक गुणवत्ता का परिचय दिया है। विद्यालय के विद्यार्थियों ने कड़ी मेहनत, अनुशासन और शिक्षकों के मार्गदर्शन में शानदार प्रदर्शन किया।

विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों में महक गुप्ता ने 98% अंक प्राप्त कर शीर्ष स्थान हासिल किया। इसके अतिरिक्त सुकृति ने 96.5%, रिद्धि सिंह ने 94.2%, अफीफा अंसारी ने 93%, रैना सिंह ने 93.8%, अवन्तिका जैन ने 91% तथा देव पुंडीर ने 90% अंक प्राप्त कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय प्रबंधन ने सभी सफल विद्यार्थियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। प्रधानाचार्य ने विद्यार्थियों की इस उपलब्धि का श्रेय उनकी मेहनत, शिक्षकों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग को दिया।

सीबीएससी बोर्ड परीक्षा में एसएनएम पब्लिक स्कूल ने फिर लहराया अपना परचम

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी एसएनएम पब्लिक स्कूल, भाऊवाला के छात्रों ने सीबीएसई के कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया है। एसएनएम स्कूल के शिक्षक अपने छात्रों पर लगातार मेहनत करते हैं जिसके परिणामस्वरूप स्कूल का रिजल्ट साल दर साल बेहतर होता जा रहा है। स्कूल के छात्र दिव्यांश ममगई ने 93% अंक प्राप्त कर स्कूल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। स्कूल अपने सभी छात्रों को बधाई देता है।

सीबीएसई 10वीं रिजल्ट 2026: इंडियन पब्लिक स्कूल के छात्रों की शानदार सफलता

द इंडियन पब्लिक स्कूल, देहरादून ने एक बार फिर शैक्षणिक उत्कृष्टता का परिचय देते हुए सीबीएसई कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2026 में शानदार प्रदर्शन किया है। विद्यालय ने 85.03% का प्रभावशाली औसत प्रतिशत दर्ज किया, जो छात्रों की मेहनत, शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग को दर्शाता है। परिणाम विश्लेषण के अनुसार, 41.93% छात्रों ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए, जबकि 32.25% छात्र 80-89% के बीच रहे। इसके अतिरिक्त, 16.12% छात्रों ने 70-79% और 9.67% छात्रों ने 60-69% अंक प्राप्त किए, जो समग्र रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन को दर्शाता है। टॉपर्स में आदित्य राज ने 95.2% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। उनके बाद प्रियम कुमार ने 95% के साथ द्वितीय स्थान और रिदांत गुप्ता ने 94.6% के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। अन्य उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले छात्रों में भाव्या रमोला (94.4%), दिव्युति राकेशकुमार पारिख (94%), अथर्व बंसल (94.2%), मनीष ढाका (93.6%), तनिष्क नेगी (92.6%), अक्षिता मॉल (91.6%), रुद्र राज (91%), प्रियांशु कुमार (91%), प्रांतिक रॉय (90.4%) और सुमित राज (90%) शामिल हैं। विद्यालय को उन छात्रों पर विशेष गर्व है जिन्होंने विभिन्न विषयों में 100% अंक प्राप्त कर उत्कृष्टता का नया मानक स्थापित किया। अंग्रेजी विषय में रिडेंट गुप्ता और क्रिस्टेबल ने पूर्ण अंक प्राप्त किए। सामाजिक विज्ञान में भाव्या रमोला ने 100% अंक हासिल किए। पेंटिंग विषय में अक्षिता मॉल, भाव्या रमोला, नव्या डब्बास और सताक्षी भारद्वाज ने पूर्ण अंक प्राप्त किए। कंप्यूटर एप्लिकेशन में प्रांतिक रॉय और रिडेंट गुप्ता ने 100% अंक हासिल किए। विद्यालय प्रबंधन ने इस शानदार उपलब्धि पर सभी छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

दसवीं की बोर्ड परीक्षा में चमके बलूनी के सितारे

देहरादून। सोशल बलूनी पब्लिक स्कूल (एसबीपीएस) के छात्र-छात्राओं ने दसवीं की बोर्ड परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन किया। स्कूल का रिजल्ट शत प्रतिशत रहा। स्कूल के 19 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किये। परिणाम घोषित होते ही स्कूल में जश्न का माहौल था। बोर्ड परीक्षा में सफल बच्चे स्कूल में पहुंचने पर ढोल-नगाड़ों के साथ स्वागत किया गया। बलूनी ग्रुप के एमडी विपिन बलूनी ने सभी सफल छात्रों को शुभकामनाएं दीं और उम्मीद जतायी कि भविष्य में भी इन छात्रों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहेगा। सीबीएसई ने बुधवार देर शाम को दसवीं की बोर्ड परीक्षा का परिणाम जारी किया। परिणाम जारी होते ही एसबीपीएस में खुशी की लहर दौड़ गयी। बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं और उनके अभिभावक स्कूल पहुंचे। स्कूल में जश्न का माहौल था। स्कूल के 19 बच्चों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल किये। वहीं 85 प्रतिशत से ऊपर 85 बच्चे और 80 प्रतिशत से ऊपर 114 बच्चे रहे। कुल मिलाकर 202 बच्चे 80 प्रतिशत से ऊपर अंक लाकर सफलता की नई इबारत लिख गए। स्कूल प्रधानाचार्य पंकज नौटियाल ने भी सभी सफल छात्रों को शुभकामनाएं दीं हैं।

95 प्रतिशत से अधिक अंक हासिल करने वाले एसबीपीएस के सितारे

ओजस नौटियाल, 97.4 प्रतिशत, नम्या मनोरी, 97.4 प्रतिशत, अरनव सिंह चौहान 97.2 प्रतिशत, वर्णिका पवार 96.8 प्रतिशत, निष्ठा पांडे 96.6 प्रतिशत उज्जवल नौटियाल 96.6 प्रतिशत, कृष्णकांत सेमवाल 96.4 प्रतिशत, आदित्य रमोला 96.2 प्रतिशत, मनस्वी बिष्ट 96.2 प्रतिशत, आदित्य रावत 96 प्रतिशत, आरव गौर 95.8 प्रतिशत, आदित्री शुक्ला 95.6 प्रतिशत, अपेक्षा राणा 95.6 प्रतिशत, आशिया 95.6 प्रतिशत, मेधांश गोस्वामी 95.6 प्रतिशत, मुस्कान बिष्ट 95.6 प्रतिशत, वैभवी भंडारी 95.2 प्रतिशत, रिया चौहान 95 प्रतिशत, शगुन सेमवाल 95 प्रतिशत।

द हेरिटेज स्कूल की बोर्ड परीक्षा में कक्षा 10 के विद्यार्थियों ने लहराया सफलता का परचम

द हेरिटेज स्कूल नॉर्थ कैंपस को यह बताते हुए अत्यंत ही हर्ष हो रहा है कि सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा घोषित परीक्षा परिणाम में द हेरिटेज स्कूल नॉर्थ कैंपस के विद्यार्थियों ने एक नया इतिहास रचा है। अपने परिश्रम, लगन तथा एकाग्रता से विद्यार्थियों ने बहुत ही शानदार परीक्षा परिणाम दिया है। विद्यालय के होनहार विद्यार्थियों ने फिर इस बात को सही साबित कर दिया है कि अगर दृढ़ निश्चय और सही मार्गदर्शन हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। होनहार छात्र अरव जोशी ने 97 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया। परिणीति कपूर और आदित्य रावत 94.2 प्रतिशत अंक लेकर द्वितीय स्थान पर रहे। अल्मिता सहगल ने 94.8 प्रतिशत अंक हासिल करके तीसरा स्थान प्राप्त किया और चौथे स्थान पर 94.2 प्रतिशत अंक लेकर अर्पिता धीमान और खुशी ने अपनी योग्यता और प्रतिभा का परिचय दिया। इस वर्ष के परीक्षा परिणाम में उपलब्धियों की कमी नहीं रही। मधुरविहारी भारद्वाज ने 93.6, अनुश्री कोठारी ने 93.4, आरुष रावत ने 92.2, अब्दुल्ला शमशाद ने 92,अगाथा थोरिया ने 91.8, यथार्थ श्रीवास्तव ने 91.8, कार्तिक प सिंह ने 91.2, शिवांश निखिल ने 91, और सायना रावत ने 90.6 प्रतिशत अंक हासिल करके विद्यालय का नाम रोशन किया। प्रधानाचार्या दीपाली सिंह ने सभी विद्यार्थियों को उनके अथक मेहनत और प्रयास से प्राप्त इस सफलता के लिए बधाई दी तथा अभिभावकों को भी शुभकामनाएं प्रेषित की। उन्होंने समस्त स्टाफ के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि अपनी निस्वार्थ निष्ठा भावना से विद्यार्थियों का सही मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अभिभावकों और शिक्षकों का एकजुट होकर कार्य करना अति आवश्यक है। विद्यालय के अध्यक्ष श्री अवधेश चौधरी संचालक श्री सिद्धार्थ चौधरी व चंद्रिका चौधरी ने भी सभी विद्यार्थियों व अभिभावकों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की और कहा कि शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने के लिए वे सदैव प्रयासरत रहेंगे ताकि सफलता का यह सफर निरंतर सुगम बने और विद्यालय निरंतर सफलता के नये सोपान चढ़ता रहे। 100% परीक्षा परिणाम के लिए उन्होंने समस्त शिक्षक वृंद की सराहना की।

ट्रिनिटी हाई स्कूल का बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन

देहरादून। ट्रिनिटी हाई स्कूल के छात्रों ने इस वर्ष बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। छात्र अनंत ने 98% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया, साथ ही अंग्रेजी, गणित और आईटी में 99-99 अंक प्राप्त किए। अन्य सफल छात्रों में पूर्णेश (95%), सार्थक (94%), स्वास्तिका (93%), अरुषि नेगी (92%) सहित कई विद्यार्थियों ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए। विद्यालय प्रबंधन ने इस सफलता का श्रेय शिक्षकों की मेहनत, छात्रों के समर्पण और अभिभावकों के सहयोग को दिया तथा सभी विद्यार्थियों को बधाई दी।

कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2026 में वैंटेज हॉल का शानदार प्रदर्शन

वैंटेज हॉल गर्ल्स रेजिडेंशियल स्कूल को यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि उसके छात्राओं ने कक्षा 10 बोर्ड परीक्षा 2026 में शानदार प्रदर्शन किया है। यह परिणाम छात्राओं की मेहनत, लगन और उत्कृष्टता के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण है, जिसे शिक्षकों के मार्गदर्शन और अभिभावकों के सहयोग ने और मजबूत बनाया। इस वर्ष अक्षिता ने 95.60% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान हासिल किया। उनके बाद गौरिका अग्रवाल ने 95.40% और निशिता एलंगबाम ने 95.20% अंक प्राप्त कर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इन छात्राओं की उपलब्धियां उनके अनुशासन, समर्पण और कठिन परिश्रम को दर्शाती हैं। विद्यालय ने अपनी उत्कृष्ट शैक्षणिक परंपरा को बनाए रखते हुए इस वर्ष भी शानदार परिणाम दर्ज किया, जिसमें 70% छात्राओं ने 90% से अधिक अंक प्राप्त किए। यह विद्यालय के उच्च शैक्षणिक स्तर को दर्शाता है। विद्यालय प्रबंधन ने सभी छात्राओं को इस उपलब्धि पर बधाई दी और शिक्षकों के निरंतर प्रयासों एवं मार्गदर्शन की सराहना की। ये परिणाम वैंटेज हॉल की उस प्रतिबद्धता को पुनः सिद्ध करते हैं, जिसमें वह छात्राओं के सर्वांगीण विकास, आत्मविश्वास और शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्राथमिकता देता है। विद्यालय सभी सफल छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं देता है और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

अक्षिता (95.60%)

गौरिका अग्रवाल (95.40%)

निशिता एलंगबाम (95.20%)

वैंटेज हॉल गर्ल्स रेजिडेंशियल स्कूल

सीबीएसई स्कूल रिजल्ट 2026: कक्षा 10वीं

दून इंटरनेशनल स्कूल

रुद्रक्ष रावत (99.4%)

ईशान बैनिवाल (98.6%)

पोलिना पॉल (98.6%)

टोंस ब्रिज स्कूल

प्रियांस कुनयाल (98.4)

रिद्धि (98.4)

कसिगा स्कूल

तनमय शर्मा (96%)

अयान इकबाल (96%)

रागिनी शर्मा (94%)

शिक्षांकुर स्कूल

चित्राक्ष सूद (99%)

राज्ञा कॉल (98.2%)

श्रेया गोदियाल (97.4%)

दून वैली इंटरनेशनल स्कूल

अनुकृत उपाध्याय (96.2%)

सुहानी रावत (95.60%)

तनिषा नेगी (93.20%)

संत कबीर अकादमी

श्रिष्ठी बहुगुणा (98.4%)

नंदा (97.2%)

पद्मजा गुप्ता (97%)

द पेस्टल वीड स्कूल

महक गुप्ता (98%)

सुकृति (96.5%)

रिद्धि सिंह (94.2%)

ब्रिस्टल पब्लिक स्कूल

गौरव गुप्ता (95%)

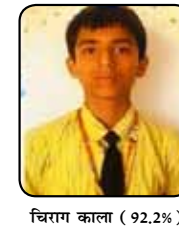
चिराग काला (92.2%)

अंकिता गुसांई (91.2%)

एसएनएम पब्लिक स्कूल

दिव्यांश ममगई (93%)

पलक किमोटी (91%)

साहिल सिंह (90.33%)

द इंडियन पब्लिक स्कूल

आदित्य राजने (95.2%)

प्रियम कुमार (95%)

रिदांत गुप्ता (94.6%)

डॉ. कुसुम अरुणाचलम

हिमालय की गोद से उठी एक सशक्त वैज्ञानिक पहचान

उत्तराखंड के टिहरी गढ़वाल के एक छोटे से गाँव सेंडुल से निकलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाली डॉ. कुसुम अरुणाचलम का जीवन संकल्प और शैक्षणिक उत्कृष्टता की एक अनूठी कहानी है। अपने पिता, प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. बी.पी. मैठानी के आदर्शों पर चलते हुए, उन्होंने नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी से पीएचडी की और हिमालयी पारिस्थितिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण अनुसंधान किए।

अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि और अपनी शिक्षा पृष्ठभूमि के बारे में बताएं?

मेरा जन्म उत्तराखंड के शांत और प्रकृति से समृद्ध गाँव सेंडुल (टिहरी गढ़वाल) में हुआ। मेरा व्यक्तित्व और जीवन के प्रति दृष्टिकोण मेरे माता-पिता की प्रेरणा से निर्मित हुआ है। मेरे पिता, डॉ. बी. पी. मैठानी, एक दूरदर्शी वैज्ञानिक, शिक्षाविद् और संस्थान निर्माता थे, जिन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में ग्रामीण विकास को नई दिशा दी। उन्होंने मुझे सिखाया कि शिक्षा समाज और राष्ट्र निर्माण का सबसे सशक्त उपकरण है। मेरी माता, श्रीमती सरोज मैठानी, एक स्नेहमयी और धैर्यशील गृहिणी थीं, जिन्होंने मुझे कठिन परिस्थितियों में संतुलन बनाए रखने की शक्ति दी। चार भाई-बहनों में सबसे बड़ी होने और माँ के अस्वस्थ रहने के कारण, बचपन से ही घर की जिम्मेदारियां मुझ पर आ गईं, जिसने मुझे समय से पहले परिपक्व बना दिया।

मेरी शिक्षा की यात्रा उपलब्धियों और संकल्पों से भरी रही है:

- 1978 में पाँचवीं कक्षा में मैंने बेरीनाग तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिसके लिए मुझे मेधावी छात्रा छात्रवृत्ति मिली। 1983 में दसवीं के दौरान, लगातार स्थान परिवर्तन के कारण मैंने निजी रूप से परीक्षा दी और आत्म-अनुशासन से 72% अंक प्राप्त किए।
- मैंने गुवाहाटी के प्रतिष्ठित कॉटन कॉलेज से 1989 में वनस्पति विज्ञान में स्नातक किया। इसके बाद 1992 में नॉर्थ-ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग से प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की।
- 1993 में प्रोफेसर आर. एस. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में मैंने इकोलॉजी प्रयोगशाला में अपनी पीएचडी प्रारंभ की। मेरा शोध पूर्वोत्तर भारत के झूम कृषि क्षेत्रों की पारिस्थितिकी और उनके पुनरुद्धार पर केंद्रित था। मेरे शैक्षणिक जीवन में निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ-साथ मुझे विभिन्न स्तरों पर छात्रवृत्तियों से भी सम्मानित किया गया। पाँचवीं कक्षा में बेरीन तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त करने के बाद मेने आगे की शिक्षा के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया। यह न केवल एक आर्थिक सहयोग था, बल्कि मेरे आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की प्रेरणा का भी स्रोत बना। मेरी शैक्षणिक उपलब्धियों को देखते हुए मुझे स्नातकोत्तर स्तर से आगे की पढ़ाई के दौरान निरंतर मेधा आधारित छात्रवृत्तियाँ प्राप्त होती रहीं। इन छात्रवृत्तियों ने मेरे शोध और उच्च शिक्षा के मार्ग को सशक्त बनाया तथा मुझे बिना किसी बाधा के अपने अकादमिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

आपके प्रोफेशन के बारे में बताएं या किस तरह से आप इस प्रोफेशन में आएं और आप किसे प्रभावित हुए?

मेरा प्रोफेशन मुख्य रूप से वैज्ञानिक अनुसंधान, शिक्षण और शैक्षणिक प्रशासन का संगम है। ज्ञान की सीमाओं को तोड़ने की मेरी निरंतर जिज्ञासा ने मुझे शोध की दिशा में प्रेरित किया। मैं अपने पिता के दूरदर्शी दृष्टिकोण और उनकी संस्थान निर्माण की क्षमता से अत्यधिक प्रभावित रही हूँ। मैं इस क्षेत्र में एक शोधकर्ता के रूप में आई, जहाँ मैंने मेघालय और अरुणाचल प्रदेश के दुर्गम क्षेत्रों में गहन अध्ययन किया। मेरा कार्य

मुख्य रूप से हिमालयी पारिस्थितिक तंत्र की गहराई को समझने पर केंद्रित रहा है। मैंने केवल अकादमिक शोध तक सीमित न रहकर उसे समाज, किसानों और नीति-निर्माण से जोड़ने का प्रयास किया है । शिक्षण, शोध और प्रशासन-तीनों क्षेत्रों में सक्रिय रहते हुए, मैंने विश्वविद्यालय में विभागाध्यक्ष, डीन, निदेशक तथा कार्यवाहक कुलपति जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया है। इन भूमिकाओं में मेरा प्रयास हमेशा यही रहा कि शिक्षा और शोध को समाज के साथ जोड़ा जाए और एक ऐसा शैक्षणिक वातावरण बनाया जाए, जहाँ नवाचार, संवेदनशीलता और उत्कृष्टता साथ-साथ विकसित हों। मेरे शैक्षणिक और शोध कार्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त हुई है, जिसके अंतर्गत मुझे विभिन्न देशों-जर्मनी, श्रीलंका, मलेशिया और थाईलैंड-की शैक्षणिक एवं शोध संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करने का अवसर मिला।

आपकी उपलब्धियों के बारे में बताएं आपने क्या काम किया है?

मेरे कार्यों ने पर्यावरण विज्ञान और हिमालयी पारिस्थितिकी में नए आयाम स्थापित किए हैं।

मेरी प्रमुख उपलब्धियां निम्नलिखित हैं:

पीएच.डी. के बाद मेरा शोध हिमालयी पारिस्थितिक तंत्रों की गहराई से समझ विकसित करने की दिशा में निरंतर विस्तारित होता गया। मैंने पश्चिमी और पूर्वी हिमालय-दोनों क्षेत्रों में कार्य करते हुए मृदा कार्बन गतिकी, सूक्ष्मजीव विविधता, पारिस्थितिकी सेवाओं, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, तथा एग्रोफॉरेस्ट्री प्रणालियों पर व्यापक और बहुआयामी शोध किया। मेरे कार्यों ने यह स्थापित किया कि हिमालय केवल एक भौगोलिक क्षेत्र नहीं, बल्कि एक अत्यंत संवेदनशील पारिस्थितिक तंत्र है, जिसकी स्थिरता देश के पर्यावरणीय संतुलन और जलवायु सुरक्षा से सीधे जुड़ी हुई है। मेरे द्वारा संचालित एवं सहयोगित अनेक शोध परियोजनाएँ-जैसे हिमालयी एग्रोफॉरेस्ट्री प्रणालियों में कार्बन गतिकी, क्रिटिकल जोन ऑब्जर्वेटरी, जलवायु-सहनीय कृषि, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेजीकरण, तथा पारिस्थितिकी सेवाओं का मूल्यांकन-प्रत्यक्ष रूप से राष्ट्रीय विकास, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन तथा सतत विकास लक्ष्यों को सुदृढ़ करने में योगदान देती रही हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से मैंने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से लगभग 10 करोड़ रुपये से अधिक की शोध निधि विश्वविद्यालय में लाने और उसके प्रभावी उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैंने अपने शोध को केवल अकादमिक सीमाओं तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे समाज, किसानों और नीति-निर्माण से जोड़ा। विशेष रूप से हिमालयी क्षेत्रों में समुदाय-आधारित शोध के माध्यम से मैंने यह स्थापित किया कि स्थानीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय ही दीर्घकालिक सतत विकास का आधार है।

मेरे जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम रहा है-मार्गदर्शन। अब तक मैं 20 से अधिक पीएच.डी. शोधार्थियों, 6 पोस्ट-डॉक्टरल शोधकर्ताओं तथा अनेक स्नातकोत्तर छात्रों का मार्गदर्शन कर चुकी हूँ। मेरे मार्गदर्शन में तैयार हुए विद्यार्थी आज देश-विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों में कार्यरत हैं और विज्ञान, नीति तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। यह मेरे लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है कि मैं नई पीढ़ी के वैज्ञानिकों को तैयार करने में योगदान दे सकी। एक महिला वैज्ञानिक के रूप में मेरी यात्रा प्रेरणा और संघर्ष दोनों से भरी रही है। मुझे भारत सरकार द्वारा "यंग वुमन बायोसाइंटिस्ट अवॉर्ड", "वुमन बायोसाइंटिस्ट अवॉर्ड" सहित अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया गया है, जो न केवल मेरी उपलब्धियों का प्रमाण है, बल्कि विज्ञान में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और नेतृत्व की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत भी है। इसके साथ ही, मुझे देश की विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थाओं में विशेषज्ञ के रूप में योगदान देने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैंने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग की महिला वैज्ञानिक योजनाओं, राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी, संघ लोक सेवा आयोग तथा अन्य राष्ट्रीय समितियों में विशेषज्ञ सदस्य के रूप में कार्य करते हुए नीतिगत निर्णयों, चयन प्रक्रियाओं और वैज्ञानिक दिशा निर्धारण में अपनी भूमिका निभाई है।

आपके भविष्य की योजनाओं के बारे में बताएं?

आज जब मैं अपने जीवन की यात्रा को देखती हूँ, तो यह केवल मेरी व्यक्तिगत कहानी नहीं, बल्कि एक व्यापक दृष्टि की कहानी है-जहाँ विज्ञान, समाज और प्रकृति एक साथ जुड़े हुए हैं। एक छोटे से हिमालयी गाँव से निकलकर, सूक्ष्मजीवों की अदृश्य दुनिया को समझते हुए, हिमालय के जटिल पारिस्थितिक तंत्रों पर कार्य करते हुए, और सैकड़ों विद्यार्थियों के जीवन को दिशा देते हुए-यह मेरी पहचान की यात्रा है, जो आज भी निरंतर आगे बढ़ रही है। मेरे भविष्य के

लक्ष्य विज्ञान, समाज और प्रकृति के बीच एक सशक्त सेतु स्थापित करने पर केंद्रित हैं। मैं विशेष रूप से हिमालयी पारिस्थितिक तंत्रों में "नेचर-बेस्ड सॉल्यूशन्स" को आगे बढ़ाते हुए जलवायु परिवर्तन, कार्बन प्रबंधन और पारिस्थितिकी सेवाओं के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर योगदान देना चाहती हूँ। मेरा उद्देश्य "ट्रीज आउटसाइड फॉरेस्ट" और शहरी हरित क्षेत्रों पर एकीकृत शोध को विकसित कर नीति निर्माण से जोड़ना है, ताकि सतत और समावेशी विकास सुनिश्चित हो सके। साथ ही, मैं युवाओं-विशेषकर महिला वैज्ञानिकों-को मार्गदर्शन देकर एक नई पीढ़ी तैयार करना चाहती हूँ, जो विज्ञान को समाज के हित में प्रयोग करे। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, उन्नत शोध केंद्रों की स्थापना और समुदाय-आधारित समाधान विकसित करना मेरे आगामी प्रयासों के प्रमुख आयाम रहेंगे

आप दिव्य हिमगिरी पत्रिका के माध्यम से क्या संदेश देना चाहेंगे?

मैं दिव्य हिमगिरी पत्रिका के माध्यम से यह संदेश देना चाहती हूँ कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, यदि संकल्प मजबूत हो तो सफलता निश्चित है। मेरी अपनी यात्रा एक छोटे से हिमालयी गाँव से शुरू होकर सूक्ष्मजीवों की अदृश्य दुनिया और विश्वविद्यालय के शीर्ष पदों तक पहुँची है, जो यह दर्शाती है कि दृढ़ संकल्प और आत्म-अनुशासन से कोई भी बाधा पार की जा सकती है। विशेष रूप से महिलाओं और युवाओं के लिए मेरा संदेश है कि शिक्षा को केवल व्यक्तिगत सफलता का माध्यम न समझें, बल्कि इसे समाज और राष्ट्र निर्माण के उपकरण के रूप में देखें। विज्ञान को प्रयोगशालाओं से निकालकर खेतों और समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाना आवश्यक है। स्थानीय पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का समन्वय ही हमारे देश के दीर्घकालिक सतत विकास का असली आधार है। अपनी जड़ों से जुड़े रहें और अपनी क्षमताओं पर अटूट विश्वास रखें।

12 साल में पहली बार संसद में अटकी मोदी सरकार

महिला आरक्षण से जुड़े 131वें संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा में बड़ा झटका लगा, जिसने देश की राजनीति में नई बहस छेड़ दी है। शुक्रवार को हुए मत विभाजन में सरकार आवश्यक दो-तिहाई बहुमत हासिल करने में नाकाम रही। बिल के पक्ष में 298 और विरोध में 230 वोट पड़े, जबकि इसे पारित कराने के लिए 352 मतों की जरूरत थी। इस तरह सरकार 54 वोटों से पीछे रह गई और विधेयक विचार स्तर पर ही गिर गया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने परिणाम की घोषणा करते हुए स्पष्ट किया कि आवश्यक समर्थन न मिलने के कारण आगे की प्रक्रिया संभव नहीं है। करीब 21 घंटे तक चली लंबी बहस में 130 सांसदों ने हिस्सा लिया, जिनमें 56 महिला सांसद भी शामिल रहीं जो इस मुद्दे की गंभीरता को दर्शाता है। विपक्ष ने इसे अपनी बड़ी राजनीतिक जीत बताया है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सरकार पर तीखा हमला करते हुए कहा कि यह केवल महिला आरक्षण का मामला नहीं, बल्कि संविधान और लोकतांत्रिक ढांचे की लड़ाई थी। इस घटनाक्रम को मोदी सरकार के लिए पिछले 12 वर्षों का सबसे बड़ा संसदीय झटका माना जा रहा है, जिसने आने वाले राजनीतिक समीकरणों को और दिलचस्प बना दिया है।

महिला आरक्षण से जुड़े 131वें संविधान संशोधन विधेयक को लोकसभा में बड़ा झटका लगने के बाद देश की राजनीति में हलचल तेज हो गई है। शुक्रवार को सदन में हुए मत विभाजन में यह विधेयक आवश्यक दो-तिहाई बहुमत हासिल नहीं कर सका और विचार स्तर पर ही गिर गया। इस दौरान विधेयक के पक्ष में 298 वोट पड़े, जबकि 230 सांसदों ने इसके विरोध में मतदान किया। कुल 528 सांसदों ने मतदान में हिस्सा लिया, लेकिन विधेयक को पारित कराने के लिए 352 मतों की जरूरत थी। इस तरह केंद्र सरकार आवश्यक आंकड़े से 54 वोट पीछे रह गई। परिणाम घोषित करते हुए लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि आवश्यक बहुमत न मिलने के कारण विधेयक को आगे नहीं बढ़ाया जा सकता। यह घटनाक्रम राजनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि पिछले 12 वर्षों में यह पहला मौका है जब केंद्र की भारतीय जनता पार्टी नीत सरकार संसद में कोई अहम विधेयक पारित कराने में विफल रही है। इससे पहले सरकार कई महत्वपूर्ण कानूनों को आसानी से पारित कराती रही है, लेकिन इस बार संख्या बल उसके पक्ष में नहीं दिखा। यह परिणाम न केवल संसद के भीतर बदलते समीकरण ों को दर्शाता है, बल्कि विपक्ष की बढ़ती एकजुटता का भी संकेत देता है। विधेयक पर लोकसभा में करीब 21 घंटे तक लंबी और विस्तृत चर्चा हुई। इस दौरान 130 सांसदों ने अपने विचार रखे, जिनमें 56 महिला सांसद भी शामिल थीं। बहस के दौरान पक्ष और विपक्ष दोनों ने अपने-अपने तर्क रखे। सरकार ने इसे महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम बताया, जबकि विपक्ष ने इसके प्रावधानों और समयसीमा पर सवाल उठाए। कई विपक्षी नेताओं का कहना था कि विधेयक में व्यावहारिक कमियां हैं और इसे लागू करने के लिए स्पष्ट रोडमैप की जरूरत है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने इस मुद्दे पर सरकार पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि यह केवल महिला आरक्षण का सवाल नहीं है, बल्कि संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था की रक्षा का मामला है। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार इस विधेयक के जरिए राजनीतिक ढांचे में बदलाव करने की कोशिश कर रही है। उनके इस बयान को विपक्षी दलों का व्यापक समर्थन मिला और इसे सरकार के खिलाफ एक मजबूत राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। विपक्षी दलों ने इस परिणाम को अपनी बड़ी जीत बताया है। उनका कहना है कि यह लोकतंत्र की जीत है और सरकार को यह समझना चाहिए कि बिना व्यापक सहमति के ऐसे महत्वपूर्ण विधेयक पारित नहीं किए जा सकते। कई विपक्षी नेताओं ने यह भी कहा कि सरकार को महिलाओं के मुद्दे पर गंभीरता दिखानी चाहिए और केवल

परिसीमन पर विपक्ष का तीखा विरोध, “यह महिलाओं का नहीं, सत्ता बचाने का बिल था”

लोकसभा में महिला आरक्षण से जुड़े 131वें संविधान संशोधन विधेयक के गिरने के बाद देश की राजनीति में घमासान तेज हो गया है। जहां एक ओर केंद्र सरकार इस विधेयक को महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में ऐतिहासिक कदम बता रही थी, वहीं विपक्ष ने इसे “परिसीमन के जरिए सत्ता में बने रहने की रणनीति” करार देते हुए जोरदार विरोध किया। शुक्रवार को हुए मत विभाजन में सरकार आवश्यक दो-तिहाई बहुमत हासिल नहीं कर सकी और बिल 45 वोट से गिर गया। इसके साथ ही संसद में सत्ता और विपक्ष के बीच टकराव खुलकर सामने आ गया है। विपक्ष ने स्पष्ट किया है कि उसका विरोध महिला आरक्षण से नहीं, बल्कि उससे जुड़े अन्य प्रावधानों से था। खासतौर पर परिसीमन बिल को लेकर विपक्ष ने दो बड़े मुद्दे उठाए। पहला, इससे दक्षिण भारत के राज्यों की संसद में राजनीतिक ताकत कम हो सकती है, और दूसरा, यह ओबीसी तथा एससी-एसटी वर्ग के हितों के खिलाफ माना गया। विपक्षी दलों का कहना है कि इस तरह के संवेदनशील मुद्दों को बिना व्यापक सहमति के लागू करना लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि यह केवल महिला आरक्षण का मुद्दा नहीं है, बल्कि संविधान और देश की राजनीतिक संरचना को बदलने की कोशिश है। उन्होंने कहा, “हमने संविधान पर हुए इस हमले को हरा दिया है। हमने साफ तौर पर कहा है कि यह महिला आरक्षण बिल नहीं है, बल्कि यह भारत की राजनीतिक संरचना को बदलने का एक तरीका है।” उनके इस बयान को विपक्षी दलों का व्यापक समर्थन मिला और इसे सरकार के खिलाफ मजबूत राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। वहीं, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने भी सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने शनिवार को कहा कि लोकसभा में जो कुछ हुआ, वह लोकतंत्र की बड़ी जीत है। उनके मुताबिक, सरकार महिला आरक्षण

और परिसीमन के जरिए सत्ता में बने रहने की साजिश कर रही थी। उन्होंने कहा, “मैं बहुत खुश हूं कि लोकसभा में सीटें बढ़ाने के लिए लाया गया बिल गिर गया। सत्ता पक्ष हमें महिला विरोधी कहकर खुद को मसीहा नहीं बना सकता।” प्रियंका गांधी ने कहा कि प्रधानमंत्री के भाषणों में यह संकेत दिया जा रहा था कि जो इस बिल से सहमत नहीं होगा, वह लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल होने के योग्य नहीं है। उन्होंने इस पर हैरानी जताते हुए कहा कि इससे सरकार की मंशा पर सवाल खड़े होते हैं। उनके अनुसार, पूरी रणनीति इस तरह बनाई गई थी कि परिसीमन को महिलाओं के नाम पर लागू किया जाए, ताकि सत्ता में बने रहने का रास्ता आसान हो सके। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि सरकार ने यह सोचकर बिल पेश किया था कि अगर यह पास हो जाता है तो उसकी बड़ी जीत होगी, और अगर नहीं होता है तो विपक्ष को महिला विरोधी बताकर राजनीतिक लाभ उठाया जाएगा। प्रियंका गांधी ने कहा, “यह साफ है कि यह महिलाओं के लिए नहीं, बल्कि परिसीमन के लिए लाया गया था। मैं खुश हूं कि विपक्ष ने इसका विरोध किया। यह सरकार के लिए ब्लैक डे है, क्योंकि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि बिल इस तरह गिर जाएगा।” इस विधेयक के तहत संसद की मौजूदा 543 सीटों को बढ़ाकर 850 करने का प्रस्ताव था, जो सीधे तौर पर परिसीमन प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि विपक्ष ने इसे केवल महिला आरक्षण का मुद्दा मानने से इनकार कर दिया और इसे व्यापक राजनीतिक बदलाव की रणनीति बताया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, हम महिलाओं के विरोधी नहीं हैं, और हम लंबे समय से महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। हमने 2023 के संशोधन का सर्वसम्मति से समर्थन किया और उसे पास किया। हालाँकि, उसकी आड़ में उन्होंने एक और संशोधन पेश किया, जिसमें उन्होंने परिसीमन का एक क्लॉज डाल दिया, जिससे महिलाओं के आरक्षण और परिसीमन बिल एक साथ जुड़ गए। इन तीनों बिलों को एक साथ लाकर, वे सत्ता हासिल करना चाहते थे ताकि सदन में किसी भी आगे के परिसीमन कानून को साधारण बहुमत से पास किया जा सके और बदला जा सके। कांग्रेस सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा, हमने 2023 का महिला आरक्षण अधिनियम पहले ही सर्वसम्मति से पास कर दिया था। अब सरकार को 2029 के चुनावों के लिए इस विधेयक को लागू करने के लिए तुरंत कदम उठाने होंगे। महिला आरक्षण को परिसीमन से जोड़ने का उनका एजेंडा कल फेल हो गया क्योंकि वे अपनी सुविधा के हिसाब से परिसीमन करना चाहते हैं। वहीं सपा सांसद डिंपल यादव ने कहा, ये लोग समाज को बांटने वाले हैं। इन्होंने हमेशा समाज में फूट, अविश्वास और डर पैदा किया है और इसी हथियार के दम पर ये सत्ता में बने रहे हैं। अब लोग इनकी इस चाल को समझ चुके हैं। महिला आरक्षण संशोधन बिल का लोकसभा में गिरना केवल एक विधायी घटना नहीं है, बल्कि यह सत्ता और विपक्ष के बीच बढ़ती राजनीतिक खींचतान का प्रतीक बन गया है। आने वाले दिनों में यह मुद्दा और गरमाने की संभावना है, और इसका असर देश की राजनीति के साथ-साथ चुनावी रणनीतियों पर भी साफ तौर पर देखने को मिल सकता है।

राजनीतिक लाभ के लिए ऐसे कदम नहीं उठाने चाहिए। वहीं, सरकार की ओर से इस मुद्दे पर फिलहाल संयमित प्रतिक्रिया सामने आई है। पार्टी के वरिष्ठ नेताओं का कहना है कि यह एक लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा है और सरकार भविष्य में इस विधेयक को लेकर नई रणनीति के साथ आगे बढ़ेगी। उनका यह भी कहना है कि महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकार प्रतिबद्ध है और इस दिशा में प्रयास जारी रहेंगे। इस पूरे घटनाक्रम ने संसद के भीतर सत्ता और विपक्ष के बीच संतुलन को लेकर नई बहस को जन्म दिया है। जहां एक ओर सरकार के लिए यह एक बड़ा झटका माना जा रहा है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष के लिए यह मनोबल बढ़ाने वाला परिणाम है। आने वाले समय में यह देखना अहम होगा कि सरकार इस स्थिति से कैसे निपटती है और क्या वह इस विधेयक को दोबारा पेश करने की कोशिश करती है। इस घटना का असर आने वाले चुनावों और राजनीतिक रणनीतियों पर भी पड़ सकता है। महिला आरक्षण जैसे संवेदनशील मुद्दे पर सरकार की असफलता विपक्ष को एक मजबूत चुनावी मुद्दा दे सकती है। साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया है कि संसद में अब किसी भी बड़े विधेयक को पारित कराने के लिए व्यापक सहमति और रणनीतिक तैयारी की जरूरत होगी। इस घटनाक्रम ने यह भी दिखा दिया है कि लोकतंत्र में संख्या बल कितना महत्वपूर्ण होता है। भले ही सरकार के पास बहुमत हो, लेकिन संवैधानिक संशोधन जैसे मामलों में दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता उसे चुनौतीपूर्ण बना देती है। ऐसे में भविष्य में सरकार को न केवल अपने सहयोगियों को साथ रखना होगा, बल्कि विपक्ष के साथ संवाद और सहमति बनाने पर भी जोर देना होगा। महिला आरक्षण से जुड़े इस विधेयक का लोकसभा में गिरना भारतीय राजनीति के लिए एक अहम मोड़ साबित हो सकता है। यह न केवल सरकार और विपक्ष के बीच शक्ति संतुलन को दर्शाता है, बल्कि यह भी संकेत देता है कि आने वाले समय में संसद के भीतर हर बड़ा फैसला और अधिक विचार-विमर्श और सहमति के आधार पर ही संभव हो पाएगा।

महिला आरक्षण बिल गिरने पर सत्ता पक्ष का विपक्ष पर हमला

लोकसभा में महिला आरक्षण से जुड़े 131वें संविधान संशोधन विधेयक के गिरने के बाद देश की राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है। सत्ता पक्ष ने जहां विपक्ष पर महिलाओं के अधिकारों से खिलवाड़ करने का आरोप लगाया है, वहीं विपक्ष इसे सरकार की राजनीतिक रणनीति बता रहा है। इस बीच, बिल के गिरने के तुरंत बाद भारतीय जनता पार्टी और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की महिला सांसदों ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन भी किया, जिससे यह मुद्दा और ज्यादा गरमा गया है। गृह मंत्री अमित शाह ने इस पूरे घटनाक्रम पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि सदन में "अजीब नजारा" देखने को मिला, जहां विपक्षी दलों ने एकजुट होकर इस विधेयक को पास नहीं होने दिया। उन्होंने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि इस पर जीत का जश्न मनाना निंदनीय है। शाह ने कहा कि इस बिल के गिरने से देश की महिलाओं को लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण का वह अधिकार नहीं मिल पाएगा, जिसकी लंबे समय से मांग की जा रही थी। अमित शाह ने कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों पर सीधा हमला बोलते हुए कहा कि यह पहली बार नहीं है जब उन्होंने महिलाओं से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों का विरोध किया हो, बल्कि वे पहले भी ऐसे कदम उठा चुके हैं। उन्होंने कहा, "उनकी सोच न महिलाओं के हित में है और न ही देश के हित में।" शाह ने आगे चेतावनी भरे लहजे में कहा कि यह नारी शक्ति का अपमान है और इसका असर दूर तक जाएगा। उनके मुताबिक, विपक्ष को आने वाले चुनावों में महिलाओं के गुस्से का सामना करना पड़ेगा, खासकर 2029 के आम चुनावों में। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरण रिजिजू ने भी विपक्ष की आलोचना करते हुए कहा कि अगर कांग्रेस और उसके सहयोगी दल महिलाओं को उनका अधिकार न मिलने पर जश्न मना रहे हैं, तो इससे ज्यादा दुखद कुछ नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि सरकार महिलाओं को उनका अधिकार देने के लिए प्रतिबद्ध थी, लेकिन विपक्ष की वजह से यह संभव नहीं हो पाया। सत्ता पक्ष के कुछ नेताओं ने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री ने खुद विपक्ष को इस विधेयक पर सहयोग के लिए खुला प्रस्ताव दिया था। उन्होंने यहां तक कहा था कि उन्हें इस पर राजनीतिक श्रेय (क्रेडिट) नहीं चाहिए और यदि बिल पारित हो जाता है तो वह सभी दलों को धन्यवाद देने के लिए तैयार हैं। "क्रेडिट का ब्लैंक चेक" देने की बात भी कही गई थी, लेकिन इसके बावजूद विपक्ष ने साथ नहीं दिया। दूसरी ओर, बिल के गिरने के बाद भाजपा और एनडीए की महिला सांसदों ने संसद परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। उनका कहना था कि यह केवल एक विधेयक नहीं, बल्कि देश की करोड़ों महिलाओं के अधिकारों से जुड़ा मुद्दा है। महिला सांसदों ने विपक्ष पर आरोप लगाया कि उसने राजनीतिक कारणों से महिलाओं के हितों की अनदेखी की है। महिला आरक्षण विधेयक को लेकर संसद के भीतर सत्ता और विपक्ष के बीच टकराव को और गहरा कर दिया है। जहां एक ओर सत्ता पक्ष इसे महिलाओं के अधिकारों पर हमला बता रहा है, वहीं विपक्ष इसे सरकार की राजनीतिक चाल करार दे रहा है। साफ है कि महिला आरक्षण बिल का मुद्दा अब केवल विधायी बहस तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह देश की राजनीति का बड़ा केंद्र बिंदु बन चुका है, जिसका असर आने वाले समय में और अधिक देखने को मिल सकता है।

मतदान से पहले ही आधी रात का नोटिफिकेशन बना विवाद की जड़

महिला आरक्षण से जुड़े 131वें संविधान संशोधन विधेयक पर लोकसभा में मतदान से पहले ही केंद्र सरकार द्वारा आधी रात को जारी किया गया नोटिफिकेशन अब नए राजनीतिक विवाद का कारण बन गया है। विपक्ष ने इस कदम को "जल्दबाजी" और "पूर्वनियोजित रणनीति" करार देते हुए सरकार की मंशा पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। सरकार ने बिल को संसद में पारित कराने से पहले ही उससे संबंधित प्रावधानों को लेकर अधिसूचना जारी कर दी थी। विपक्षी दलों का कहना है कि जब तक कोई विधेयक संसद के दोनों सदनों से पारित होकर कानून का रूप नहीं ले लेता, तब तक इस तरह की कार्रवाई लोकतांत्रिक प्रक्रिया के विपरीत मानी जाती है। उनका आरोप है कि सरकार को पहले ही भरोसा था कि बिल पास हो जाएगा, इसलिए उसने प्रक्रिया से पहले ही प्रशासनिक कदम उठा लिए। विपक्ष के कई नेताओं ने इसे संसद की गरिमा के खिलाफ बताया है। उनका कहना है कि इससे यह संकेत मिलता है कि सरकार संसदीय चर्चा और मत विभाजन को केवल औपचारिकता मान रही थी। इस मुद्दे को लेकर कांग्रेस पार्टी समेत कई दलों ने कड़ा विरोध जताया है और इसे लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए चिंताजनक बताया है। वहीं, सरकार की ओर से इस पर अभी तक विस्तृत प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है। यह कदम केवल प्रशासनिक तैयारी के तहत उठाया गया था। हालांकि, बिल के लोकसभा में गिरने के बाद यह नोटिफिकेशन और ज्यादा सवालों के घेरे में आ गया है, जिससे राजनीतिक माहौल और गर्मा गया है।

R.N.I.: UTTHIN/2010/41629 | Postal Regd. UA/DO/DDN/01/2025-2027

जानिए कैसा होगा आपका यह सप्ताह

पं. दीपक प्रसाद, शास्त्री (मो. 9557730042)
(ज्योतिष, कर्मकाण्ड, धर्मिक अनुष्ठान आदि)

मेष राशि- अनावश्यक खर्च सामने आ सकते हैं, जिसकी वजह से कुछ जरूरी काम रुक सकते हैं। कहीं भी बातचीत करते समय अपने मान-सम्मान का ध्यान रखें। मीडिया सेक्टर से जुड़े लोगों को खुद को और ज्यादा अपडेट करने की जरूरत है। पति-पत्नी के संबंधों में नजदीकियां बनी रहेंगी। प्रेम संबंधों में भी मधुरता रहेगी। भाग्यशाली रंग- केसरिया, भाग्यशाली अंक- 3

वृषभ राशि- आर्थिक स्थिति कुछ मध्यम रह सकती है। अचानक ऐसा खर्च सामने आ सकता है, जिसमें कटौती करना आसान नहीं होगा। अपनी किसी योजना को जल्दबाजी में लागू करना ठीक नहीं है। विरोधियों की गतिविधियों को भी नजरअंदाज न करें। खानपान में सावधानी रखें। डॉक्टर की सलाह के बिना कोई दवा न लें। भाग्यशाली रंग- लाल, भाग्यशाली अंक- 2

मिथुन राशि- किसी भी बातचीत में नकारात्मक शब्दों का प्रयोग न करें, नहीं तो बेवजह झगड़े जैसी स्थिति बन सकती है। अपने ऊपर जरूरत से ज्यादा काम न लें। इसकी वजह से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। लाभ के चक्कर में सुरक्षा संबंधी नियमों की अनदेखी न करें। घर में सकारात्मक माहौल बना रहेगा। भाग्यशाली रंग- सफेद, भाग्यशाली अंक- 4

कर्क राशि- इस समय आय के साथ-साथ खर्च भी ज्यादा रह सकते हैं। फिजूल खर्चों पर कंट्रोल रखें। व्यवसायिक प्रतिद्वंद्वियों की वजह से कुछ तनाव रह सकता है, लेकिन जल्दी ही हालात बेहतर हो जाएंगे। आपका सहयोग घर के वातावरण को अच्छा बनाए रखेगा। प्रेमी-प्रेमिका के संबंधों में नजदीकियां बढ़ेंगी। भाग्यशाली रंग- लाल, भाग्यशाली अंक- 9

सिंह राशि- युवा लापरवाही में अपने भविष्य के साथ खिलवाड़ न करें। मधुर वाणी का प्रयोग करें, नहीं तो रिश्तों में कटुता आ सकती है और मानसिक अशांति बढ़ सकती है। नौकरीपेशा लोगों के लिए अभी स्थिति लगभग यथावत रहेगी। पति-पत्नी के बीच प्रेमपूर्ण संबंध बने रहेंगे। संयमित खानपान आपको स्वस्थ रखेंगे। भाग्यशाली रंग- आसमानी, भाग्यशाली अंक- 5

कन्या राशि- पारिवारिक सुख-सुविधा से जुड़ी चीजों की खरीदारी में अच्छा समय बीतेगा। विद्यार्थी सोशल मीडिया और फालतू बातों में पड़कर अपने करियर के साथ समझौता न करें। आर्थिक मामलों में पूरी सावधानी रखें। कुछ अनावश्यक खर्च सामने आ सकते हैं। मौसम की वजह से खानपान और दिनचर्या को संयमित रखना जरूरी है। भाग्यशाली रंग- पीला, भाग्यशाली अंक- 3

तुला राशि- किसी भी विपरीत परिस्थिति में आत्मविश्वास बनाए रखें, क्योंकि कोई समस्या आपको मानसिक तनाव दे सकती है। इस समय कामकाज में नई उपलब्धियां आपका इंतजार कर रही हैं। समय के सही उपयोग के साथ आर्थिक स्थिति पर भी ध्यान देना जरूरी है। सिर्फ ज्यादा मेहनत की जरूरत है। भाग्यशाली रंग- सफेद, भाग्यशाली अंक- 1

वृश्चिक राशि- दूसरों के मामलों में दखलअंदाजी न करें, वरना इसका असर आपके मान-सम्मान पर पड़ सकता है। व्यवसायिक गतिविधियों में कुछ बदलाव होंगे। किसी नए काम को लेकर विचार-विमर्श होगा और उसके लिए ज्यादा मेहनत भी करनी पड़ेगी। आप खुद को प्रसन्न और ऊर्जावान महसूस करेंगे। भाग्यशाली रंग- केसरिया, भाग्यशाली अंक- 2

धनु राशि- फिजूल की गतिविधियों में समय खराब करने की बजाय अपने कामों पर ध्यान दें। कारोबार में कोई भी फैसला जल्दबाजी में लेने से बचें। सतर्क रहना जरूरी है, क्योंकि नकारात्मक प्रवृत्ति के लोग जलन की वजह से नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं। ऑफिस का माहौल सुकूनभरा रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। भाग्यशाली रंग- बादामी, भाग्यशाली अंक- 4

मकर राशि- अगर नया वाहन खरीदने की योजना बना रहे हैं, तो समय अनुकूल है। आप कई तरह की गतिविधियों में व्यस्त रहेंगे और सामाजिक दायरा भी बढ़ेगा। अपने ऊपर जरूरत से ज्यादा काम का बोझ न लें। इस समय बच्चों का सही मार्गदर्शन करना भी जरूरी है। अभी आय के स्रोत कम रहेंगे। भाग्यशाली रंग- आसमानी, भाग्यशाली अंक- 2

कुंभ राशि- दृढ़ निश्चय और मेहनत के साथ अपने कामों में पूरा समय दें। भाइयों के साथ किसी बात को लेकर कहासुनी हो सकती है। वरिष्ठ लोगों की मध्यस्थता से संबंधों को मधुर बनाए रखने का प्रयास करें। काम के प्रति आपकी पूरी एकाग्रता आपको नई उपलब्धियां दिला सकती है। प्रेम संबंधों में समय नष्ट न करें। भाग्यशाली रंग- गुलाबी, भाग्यशाली अंक- 9

मीन राशि- युवा अपनी किसी दुविधा के दूर होने से राहत महसूस करेंगे। अनजान व्यक्ति से कोई महत्वपूर्ण बात या काम करवाने से पहले उसकी अच्छी तरह जांच-पड़ताल करें। कार्य विस्तार की योजनाएं अमल में आएंगी। लेकिन अभी उन पर और विचार करना जरूरी है। मौसमी परेशानियां जैसे खांसी, जुकाम हो सकते हैं। भाग्यशाली रंग- नीला, भाग्यशाली अंक- 7